नवम्बर-२०१७ ◆ वर्ष ६ ◆ अंक ०६ ◆ उदयपुर

ओ३म्

सत्यार्थ सौरभ

मासिक

नवम्बर-२०१७

जड़ चेतन में अन्तर कर लो, विद्या को निज उर में भर लो।
तज दो सभी अविद्या-तम को, सत्यार्थ प्रकाश को तुम सब पढ़ लो।।

शारीरिक, आत्मिक और सामाजिक उन्नति को समर्पित

श्रीमद्दयानन्द सत्यार्थ प्रकाश न्यास
नवलखा महल परिसर, गुलाब बाग, महर्षि दयानन्द मार्ग,
उदयपुर-313001 (राज.)

₹ १० ७१

शुद्धता, गुणवत्ता, उत्तमता के प्रतीक
MDH
मसाले
असली मसाले
सच - सच
Sambhar masala
Garam masala
DEGGI MIRCH
Chunky Chat masala
Chana masala
Kitchen King
Pav Bhaji masala
Peacock Kasoori Methi
महाशियाँ दी हट्टी (प्रा०) लिमिटेड
ESTD. 1919
9/44, कीर्ति नगर, नई दिल्ली - 110015 Website : www.mdhspices.com

सत्यार्थ प्रकाश की शिक्षाओं को अपने आँचल में समेटे, सम्पूर्ण परिवार के लिए, हर आयु समूह के लिए, पठनीय और समर्पित

न्यास का मासिक मुखपत्र

सत्यार्थ सौरभ

प्रमुख संरक्षक - सत्यार्थ सौरभ

महाशय धर्मपाल जी (एम.डी.एच.)
डॉ. सुखदेव चन्द सोनी (अमेरिका)

परामर्शदाता संपादक मण्डल

डॉ. महावीर मीमांसक
आचार्य वेदप्रकाश श्रोत्रिय
डॉ. ज्वलंत कुमार शास्त्री
डॉ.सोमदेव शास्त्री
डॉ. रघुवीर वेदालंकार
आचार्य वेदप्रिय शास्त्री

सम्पादक

अशोक आर्य

प्रबन्ध सम्पादक

भवानी दास आर्य

प्रबन्ध सहयोग

नवनीत आर्य (मो.9314535379)

व्यवस्थापक

सुरेश पाटोदी (मो.9829063110)

सहयोग ◆	भारत	विदेश
संरक्षक	- 11000 रु.	$ 1000
आजीवन	-1000 रु.	$ 250
पंचवर्षीय	- 400 रु.	$ 100
वार्षिक	- 100 रु.	$ 25
एक प्रति	- 10 रु.	$ 5

भुगतान राशि धनादेश/चैक/ड्राफ्ट
श्रीमद्दयानन्द सत्यार्थ प्रकाश न्यास
के पक्ष में बना न्यास के पते पर भेजें।
अथवा यूनियन बैंक ऑफ इण्डिया
मेन ब्रांच टाऊन हॉल, उदयपुर
खाता संख्या : 310102010041518
IFSC CODE- UBIN 0531014
MICR CODE- 313026001
में जमा करा अवश्य सूचित करें।

सृष्टि संवत्
१९६०८५३११८
कार्तिक कृष्ण द्वितीया
विक्रम संवत्
२०७४
दयानन्दाब्द
१९३

November - 2017

सत्यार्थ-सौरभ में प्रकाशित लेखों में व्यक्त विचार सम्बन्धित लेखक के हैं। सम्पादक अथवा प्रकाशक का उनसे सहमत होना आवश्यक नहीं है। किसी भी विवाद के प्रतिवाद हेतु न्यायक्षेत्र उदयपुर ही होगा। आपत्ति की अवधि प्रकाशन तिथि से एक माह के भीतर ही मानी जायेगी।

विज्ञापन शुल्क (प्रति अंक)

कवर 2 व 3 (भीतरी आवरण) रंगीन
3500 रु.

अन्दर पृष्ठ (श्वेत-श्याम)

पूरा पृष्ठ (श्वेत-श्याम)	2000 रु.
आधा पृष्ठ (श्वेत-श्याम)	1000 रु.
चौथाई पृष्ठ (श्वेत-श्याम)	750 रु.

समाचार २६

हलचल २७

०४ वेद सुधा
०७ सत्यार्थप्रकाश पहेली- ११/१७
११ प्रेरणा- निक वुजिसिक
१३ विद्या और अविद्या
१४ समान नागरिक संहिता
१७ व्यस्त जीवन और योग
१९ नारी सशक्तिकरण
२२ ज्यादा मत देना परमात्मा
२४ कृषि में दही का उपयोग
२८ मधुमेह में ग्लाइसेमिक का महत्त्व
२९ कथा सरित- संतोष धन सर्वोपरि
३० सत्यार्थ पीयूष- राजनीतिक दार्शनिक

स्वामी — श्रीमद्दयानन्द सत्यार्थप्रकाश न्यास, नवलखा महल, गुलाब बाग, उदयपुर

वर्ष - ६ अंक - ०६

मुद्रण — द्वारा - चौधरी ऑफसेट, (प्रा.लि.) ११-१२, गुरु रामदास कॉलोनी, उदयपुर

प्रकाशक

श्रीमद्दयानन्द सत्यार्थप्रकाश न्यास
नवलखा महल, गुलाब बाग, उदयपुर (राजस्थान) 313001
(0294) 2417694, 09314535379, 09829063110
www.satyarthprakashnyas.org, E-mail : satyarthsandesh@gmail.com

स्वत्वाधिकारी, श्रीमद्दयानन्द सत्यार्थप्रकाश न्यास, उदयपुर की ओर से प्रकाशक, मुद्रक अशोक कुमार आर्य द्वारा चौधरी ऑफसेट प्रा. लि., 11/12 गुरुरामदास कॉलोनी, उदयपुर से मुद्रित तथा कार्यालय श्रीमद्दयानन्द सत्यार्थप्रकाश न्यास नवलखा महल गुलाबबाग, महर्षि दयानन्द मार्ग, उदयपुर-313001 से प्रकाशित, सम्पादक-अशोक कुमार आर्य

ओ३म्

वेद सुधा

मरणशील मनुष्यों का अमरदेव ही स्तुत्य

तमध्वरेष्वीळते देवं मर्ता अमर्त्यम्।
यजिष्ठं मानुषे जने।। - ऋ. ५/१४/२

ऋषिः- आत्रेयः सुतम्भरः।। देवता- अग्निः।। छन्दः- विराड्गायत्री।।

नाना प्रकार के यज्ञों में जो हम विविध कर्म करते हैं, असल में हम उन सब कर्मों द्वारा उस अमरदेव का ही पूजन करते हैं। हम मरणशील मनुष्यों को अमरदेव के ही यजन करने की आवश्यकता है। प्रत्येक यज्ञ-कर्म का प्रयोजन यही है कि हम उस द्वारा मृत्यु से पार हो जाएँ-अमर हो जाएँ। यज्ञ मर्त्य को अमर बनाने के लिए ही है, पर हम यज्ञों द्वारा जिस अमरदेव की पूजा करते हैं, वह अमरदेव है कहाँ? सुनो, वह अमरदेव प्रत्येक मानुष जन में है, प्रत्येक मनुष्य में 'यजिष्ठ' होकर विद्यमान है। हमें प्रत्येक मानुष में उसका

यजन करना चाहिए, इसीलिए कहा जाता है कि यज्ञ सब मनुष्यों के हित के लिए होता है। यज्ञ का स्वरूप परोपकार है- एक-एक मनुष्य का हितसाधन है। मनुष्यों की सेवा करना ही यज्ञ करना है। जितना हम मनुष्यों की सेवा करते है- मनुष्यों की पीड़ाओं और दुःखों को दूर करने के लिए निःस्वार्थभाव से यत्न करते हैं- उतना ही हमारे ये कार्य यज्ञ होते हैं। अग्निहोत्र द्वारा किये जानेवाले पुराने ऋतु-यागादि भी आधिदैविक-देवों की अनुकूलता प्राप्त करके मनुष्य-जनता के हित के प्रयोजन से ही किये जाते थे, पर इतने से भी यज्ञ का तात्पर्य पूरा नहीं होता। मनुष्यों की जिस किसी प्रकार की सेवा करने से यज्ञ नहीं हो जाता। हमें तो प्रत्येक मनुष्य में उस अमरदेव का ही यजन करना है। जिस सेवा से मनुष्य के अमरदेव की सेवा नहीं होती, वह सेवा सेवा नहीं है; वह सेवा-यज्ञ नहीं है। भोगविलास की सामग्री जुटाने से बेशक मनुष्यों की तृप्ति होती दीखती है, परन्तु यह मनुष्यों की सच्ची सेवा नहीं है। ऐसा 'परोपकार' यज्ञ नहीं, अयज्ञ है। इसी प्रकार भूखों को इस प्रकार अन्न देना, रोगियों को इस प्रकार औषध देना भी जो उनकी सच्ची उन्नति में- उन्हें अमर बनाने में- बाधक होवे, यह भी यज्ञ नहीं है, अर्थात् जनता की भौतिक उन्नति साधना तभी तक यज्ञ है जब यह भौतिक उन्नति उनकी आध्यात्मिक उन्नति के लिए ही हो। आध्यात्मिक उन्नति करना ही-दूसरे शब्दों में-मर्त्य से अमर बनाना है। आओ, हम मर्त्य अमरदेव की पूजा करें, मनुष्य की ऐसी सेवा करने में अपने को खो देवें जो सेवा उनको अमर बनाने में सहायक हो।

शब्दार्थ- **अध्वरेषु**=सब यज्ञों में **मर्त्ताः**=हम मरणशील मनुष्य **तं अमर्त्य देवम्**= उस अमर-कभी न मरनेवाले-देव की ही **ईळते**=पूजा करते हैं जो देव **मानुषे जने**=प्रत्येक मनुष्य के अन्दर **यजिष्ठम्**=यजनीय है।

लेखक- आचार्य अभयदेव विद्यालंकार
साभार- वैदिक विनय

आखिर कौन है जिम्मेदार

आखिर एक और स्वयंभू भगवान के काले चिठ्ठे सामने आ गए। इन्हें २० वर्ष के सश्रम कारागार की सजा सुनायी गयी है। अब हर कोई इनसे पिण्ड छुड़ाने में लगा है। वही लोग जो इनकी चौखट पर नाक रगड़ते थे आज ऐसे कन्नी काट रहे हैं जैसे कि जानते ही नहीं। जहाँ तक रामरहीम का सवाल है २० वर्ष की सजा भी इनके लिए कम ही है। पर हमारा सोचना है कि समाज की चिन्ता राम रहीम जैसे लोग नहीं बल्कि वे परिस्थितियाँ होनी चाहिए जिनमें राम रहीम, आसाराम, नित्यानन्द, रामपाल जैसे लोग परवान चढ़ते हैं। उनको कैसे रोका जाय? तर्कपूर्वक बुद्धि का प्रयोग इसका एकमात्र हल है। प्रभु ने मनुष्य को बुद्धि इसीलिए प्रदान की है कि वह उसका मनन पूर्वक कार्य करने में उपयोग करे। आज राम रहीम की अरबों की सम्पत्ति, तथा सेक्स साम्राज्य के राज परत-दर-परत खुल रहे हैं। सोचिये तो, क्या यह सब अचानक हो गया? क्या आज से पूर्व राजसी ठाटबाट रामरहीम के नहीं दिखते थे? तब यह क्यों नहीं सोचा गया कि एक संत को इन भौतिक संसाधनों की क्या आवश्यकता है और इससे भी बढ़कर यह अकूत धन इनके पास आ कहाँ से रहा है? ये गुफाएँ, सुरंगें क्यों बनायी जा रहीं हैं हथियारों के जखीरे का तपस्वी के आश्रम में क्या काम? अब हनीप्रीत और रामरहीम के वीडियो दिखाए जा रहे हैं तब क्या कुछ संदेहजनक नहीं दीखता था? स्पष्ट है कि लोग अंधभक्ति में आकण्ठ डूबे हुए थे, और कुछ जो अंधभक्ति में नहीं डूबे थे, डरते थे। उनका डर सच भी हो गया। जिस पत्रकार ने आवाज उठायी उसे दुनिया से उठा दिया गया। जब शासन के प्रमुख लोग तथा लाखों की भीड़ इनके इर्द-गिर्द दिखायी देती थी तो सामान्यजन का डरना तो स्वाभाविक था। ऐसे स्वयंभू भगवानों के लाखों भक्तों की भीड़ वोट बैंक के रूप में राजनेताओं को बुद्धि का दरवाजा बंद कर इनका सम्मान करने को विवश करती है। समाज का बौद्धिक पतन हो रहा है इसकी ओर वोट बैंक के लालच में उनकी दृष्टि भी नहीं जाती। इसके अलावा ये स्वयंभू भगवान अपनी तथाकथित दिव्य शक्तियों से उनका कल्याण कर देंगे यह लालच भी उनके समक्ष रहता है। जन सामान्य में भी यही बात उन्हें इन भगवानों का अंधभक्त बना देती है। समाज शास्त्रियों का कहना है कि व्यक्ति जब परेशानियों से घिर जाता है तो उसे ऐसे खुदाई खिदमतगार की तलाश रहती है जो चुटकी बजाते ही उनकी समस्या का समाधान कर दे। लोगों की इसी मनोवृत्ति का लाभ ये चालाक लोग उठाते हैं।

अवश्यमेव भोक्तव्यं कृतं कर्म शुभाशुभं।
नाभुक्तं क्षीयते कर्म कल्प कोटि शतैरपि।। - ब्रह्मवैवर्त्त पुराण

हमने अनेक बार लिखा है कि वेद की बात करें या गीता की अथवा तर्क की, निश्चित सिद्धान्त यही स्थिर होता है कि जो मनुष्य जैसा कर्म करेगा उसे तदनुरूप ही फल प्राप्त होगा। न कम न ज्यादा। इसमें न सिफारिश चलती है, न रिश्वत, न चापलूसी।

न किल्बिषमत्र नाधारो अस्ति न यन्मित्रैः सममममान एति।
अनूनं पात्रं निहितं न एतत्पक्तारं पक्वः पुनरा विशाति।। - अथर्ववेद १२/३/४८

आप दिन रात भगवान की तथाकथित मूर्ति के समक्ष नाक रगड़ते रहें या उसे मिष्ठान्न से आच्छादित करते रहें, उससे आपके पाप क्षमा नहीं हो सकते और न आपके प्रारब्ध और आपके पुरुषार्थ से ज्यादा कुछ आपको प्राप्त हो सकता है। अगर ऐसा होने लगे तो परमात्मा का न्याय ही क्या? इस सिद्धान्त को हृदयंगम न करने के कारण ही हम इन स्वयंभू भगवानों के जाल में फंसकर अपनी अस्मिता और सब कुछ लुटा बैठते हैं, सब कुछ देखकर भी हम अंधे बने रहते हैं और सब कुछ सुनकर भी बहरे। बाबा के पैरों से उछाले पानी में, उसके द्वारा पीकदान में उगली पान की पीक में हमें उक्त लालच में ही पवित्र चरणामृत

नजर आता है।

दूसरा निश्चित सिद्धान्त है कि मनुष्य परमात्मा का अमृत पुत्र है, परमात्म-प्राप्ति हेतु उसे किसी बिचौलिये की आवश्यकता नहीं है। आज विश्व भर में अनेकों बिचौलिए बने हुए हैं। गुरु बने हुए हैं जो आपको परमात्मा की प्राप्ति की गारण्टी दे रहे हैं। ये सब ठग हैं। हाँ, संत या सद्गुरु अगर सच्चे चिन्तनशील सदाचारी विद्याग्रही हैं तो वे आपको अमृत पथ अवश्य दिखा सकते हैं जिस पर चलकर आप एहलौकिक तथा पारलौकिक उन्नति कर सकते हैं। इन गुरुओं को आप पहचानना चाहते हैं तो निम्न कसौटी पर कस कर देख लें। धृति, क्षमा, दम, अस्तेय, शौच, इन्द्रिय-निग्रह, धी, विद्या, सत्य, अक्रोध, संतोष, अपरिग्रह तथा अहिंसा इनका परिचय देती है। इन्द्रियलोलुप राम रहीम और इन जैसे सभी ठग क्योंकर इन संतों के प्रतिनिधि हो सकते हैं। एक बात और निश्चित जान लीजिये ये सद्गुरु कभी आपको चमत्कार नहीं दिखाएँगे और न ही जादू-टोना, तंत्र, या किसी भी ऐसे उपचार के माध्यम से आपको अभिलषित फल प्राप्ति का लालच देंगें, हाँ पुरुषार्थ की जिद आपमें पैदा करेंगे तथा उसकी दिशा भी आपको अवश्य दिखाएँगे। आपमें सकारात्मकता पैदा करेंगे। दुनिया में ऐसा कोई मन्त्र नहीं है जिसका जाप कर आप बिना पुरुषार्थ के अभिलषित फल को प्राप्त करलें अतः आप स्वयं सोचें कि समोसे खिला कर अथवा बीजमन्त्र देकर आपको आपकी अभिलाषा पूरी करने की राह दिखाने वाला गुरु है या ठग। यह निर्णय तो आपको ही लेना है। टेलीविजन पर ऐसे कार्यक्रमों की भरमार है जिनमें इच्छापूर्ति के सरल से सरल उपाय बताते हैं परन्तु यदि आप उपरोक्त सिद्धान्तों को जानते और मानते हैं तो आप इनके चक्कर में नहीं आयेंगे।

आश्चर्य होता है कि एक ओर तो इंसान चाँद पर जा रहा है, विज्ञान नए नए सोपानों को उद्घाटित कर रहा है तो दूसरी ओर दुनिया भर की अविद्या को भी ऐसा पढ़ा लिखा व्यक्ति गले से लगा रहा है। संविधान की आकांक्षा तर्काधारित बौद्धिक वातावरण के विकास की है, पर हमने तर्क को तिलांजलि दे दी है, ऐसा क्यों। उत्तर है कि हममें से अधिकांश ने मानस बना लिया है कि धर्म के मामले में अकल की दखलंदाजी नहीं करनी। अब धर्म क्या है इसकी कोई परिभाषा या रूपरेखा ऐसे लोगों के समक्ष नहीं है अतः धर्म के नाम पर जो कुछ भी कह दिया जाता है उसे बिना ना-नुकर के इनके द्वारा स्वीकार कर लिया जाता है।

ऐसे वातावरण में आसानी से मान लिया जाता है कि गणेश की मूर्ति दूध पीने लगी, खड़ाउएँ चलने लगीं, हनुमान की मूर्ति रोने लगी आदि-आदि। राम रहीम, आसाराम जैसों को और क्या चाहिए ऐसी ही मनःस्थिति तो उनके लिए उर्वरा है।

यहाँ हमारा विनम्र निवेदन है कि एक और शाश्वत नियम को हम हृदयंगम कर लें, वह यह कि सृष्टिक्रम के विरुद्ध संसार में कुछ नहीं होता। जड़, चेतन की भाँति त्रिकाल में भी व्यवहार नहीं कर सकता, एक देशी, सर्वव्यापक नहीं हो सकता, अल्पज्ञ बहुज्ञ तो हो सकता है पर सर्वज्ञ नहीं। जो लोग जड़ पदार्थों से चेतन जैसा व्यवहार करते और कराते हैं उनको क्या कहा जाय?

नवम्बर के इसी मास में देव उठनी एकादशी पड़ रही है। इस दिन से शुभ कार्य प्रारम्भ किये जाते हैं। इस दिन लोग पत्थर के शालिग्राम का विवाह तुलसी के पौधे से कराते हैं। कहा जाता है कि जो ऐसा करता है उसकी मनमाँगी मुराद पूरी होती है और वह मोक्ष का अधिकारी हो जाता है। बताइये जब इतना सरल मार्ग उपस्थित है तब यम नियमों की साधना व्यक्ति क्यों करेगा। अब इस विवाह के पीछे की कहानी भी जान लीजिये, जो पुराणों में प्राप्त है। कहानी पुराणों की अन्य कहानियों की भाँति शाप और वरदानों की कथा है।

दैत्यों का राजा जालन्धर बड़ा ही पराक्रमी था सारे देवताओं की नाक में उसने दम कर रखा था। देव लोग अपनी गुहार लेकर विष्णु भगवान के पास गए तो विष्णु भगवान ने कहा कि जालन्धर की पत्नी वृन्दा का सतीत्व अखण्ड है इसी कारण जालन्धर अजेय है। उपायस्वरूप विष्णु जालन्धर का रूप धर उसके घर गए और वृन्दा का सतीत्व भंग किया। उस समय जालन्धर देवताओं से युद्ध कर रहा था। जैसे ही वृन्दा का सतीत्व भंग हुआ जालन्धर मारा गया। अब देखिये यह विष्णु का कैसा देवत्व है कि अपनी ताकत से जालन्धर का संहार करने की बजाय उसकी पतिव्रता स्त्री को धोखा दिया, उसके साथ दुराचार किया। जब

वृन्दा को यह ज्ञात हुआ कि उसे धोखे में रखकर उसके साथ दुराचार किया गया है तो उसने विष्णु को पत्थर बन जाने का शाप दिया। यही पत्थर शालिग्राम कहलाता है। विष्णु ने वृन्दा को तुलसी रूप में जन्म लेने का वरदान दिया और अपने साथ विवाह का आश्वासन भी। यहाँ भी पुराणकार की मानसिकता ने नारी को ही छला। स्मरण कीजिए इंद्र ने भी अहिल्या के साथ इसी प्रकार वेश बदल कर दुराचार किया वहाँ भी अहिल्या को पत्थर बनाया गया। और यहाँ सतीत्व का पुरस्कार सुषुप्त योनि अर्थात् तुलसी का पौधा। ऐसा क्यों? कोई जस्टीफिकेशन नहीं। अब शालिग्राम तथा तुलसी का विवाह करा मोक्ष प्राप्ति करायी जाती है।

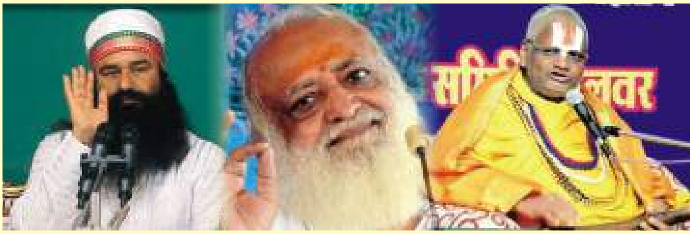

हमारा तो विनम्रता पूर्वक यही निवेदन है कि इस प्रकार की सृष्टिक्रम विरुद्ध बातों को हम संभव मान उनका अनुकरण करेंगे तो समाज में जो बौद्धिक विनाश की प्रक्रिया आज दिख रही है उससे राम रहीम, आसाराम, केशवावतार और फलाहारी जैसे पाखण्डी ठग उत्पन्न होते रहेंगे।

- अशोक आर्य
चलभाष- ०९३१४२३५१०१, ०८००५८०८४८५

नवलखा महल में नवनिर्मित ''आर्यावर्त्त चित्रदीर्घा'' एवं सत्यार्थ प्रकाश स्तम्भ के बारे में दर्शकों के विचार

आर्य समाज के संस्थापक महर्षि दयानन्द सरस्वती अपने विचारों और सत्कर्मों से आज भी हमारे समक्ष अक्षुण्ण हैं। उनके अनुयायियों द्वारा भारत की संस्कृति को कायम रखना और आगे बढ़ाना बहुत अच्छी बात है, इससे सामाजिक बुराईयों को समाप्त करने में सहायता मिलेगी। महर्षि के जीवन के तैलचित्रों को क्रमबद्ध प्रकार से देखकर अति प्रसन्नता हुई। बहुत सुन्दर लगा। महर्षि दयानन्द ने सत्यार्थ प्रकाश की रचना यहीं की थी ये मुझे आज यहाँ आकर पता चला। यहाँ (नवलखा महल) का रख-रखाव एवं साफ-सफाई अति सुन्दर है।

- राजकुमार टांक, देहरादून (उत्तराखण्ड)

पूरा नाम-
चलभाष-

सत्यार्थप्रकाश पहेली- ११/१७

सत्यार्थ सौरभ सदस्य संख्या-

रिक्त स्थान भरिये- सत्यार्थप्रकाश जैसे महान् ग्रन्थ का स्वाध्याय कीजिए। (षष्ठ समुल्लास पर आधारित)- पुरस्कार प्राप्त करिये

█	१ स	१	स्र	१	सा १	█	२ आ	२	█
३	ठे ३	█	४ व्य	४		र ४	█	५	रे ५
█	६	द्या ६	█	७	र ७		७	र ७	█

संकेत (बाएँ से दाएँ) ऊपर से नीचे न भरें।

१. जिस अपराध में साधारण मनुष्य पर एक पैसा दण्ड हो, उसी अपराध में राजा पर कितना दण्ड हो?

२. छोटे से छोटे भृत्य को समान अपराध में साधारण मनुष्य की अपेक्षा कितने गुणा दण्ड हो?

३. जो कहते हैं पहले जहाज नहीं चलते थे वे लोग कैसे हैं?

४. कौन सा व्यवहार बल-बुद्धि का नाशक है?

५. जल-मार्ग पर 'कर' स्थापन करे अथवा नहीं?

६. किसके बिना राज्य पालन की अच्छी व्यवस्था नहीं हो सकती?

७. वेद के अनुसार हम सब किसकी प्रजा हैं?

सत्यार्थ प्रकाश पहेली- ०९/१७ का सही उत्तर

१. वृषल	२. धर्म	३. अप्रीति
४. चिड़ावे	५. ५0	६. विनय
७. किसान	८. नीलकण्ठ	

''विस्तृत नियम पृष्ठ २१ पर पढ़ें एवं ₹५१०० पुरस्कार प्राप्त करें।''

कार्यालय में हल की हुई पहेली प्राप्त करने की अन्तिम तिथि- १५ दिसम्बर २०१७

बालकों के व्यक्तित्व का विकास

(१४ नवम्बर बाल दिवस के अवसर पर)

मातृमान् पितृमानाचार्यवान् पुरुषो वेद।
यह शतपथ ब्राह्मण का वचन है। वस्तुतः जब तीन उत्तम शिक्षक अर्थात् एक माता, दूसरा पिता और तीसरा आचार्य्य होवे, तभी मनुष्य ज्ञानवान् होता है। वह कुल धन्य! वह सन्तान बड़ा भाग्यवान्! जिसके माता और पिता धार्मिक, विद्वान् हों। जितना माता से सन्तानों को उपदेश और उपकार पहुँचता है, उतना किसी से नहीं। जैसे माता सन्तानों पर प्रेम, उनका हित करना चाहती है, उतना अन्य कोई नहीं करता। इसलिये (मातृमान्) अर्थात् **'प्रशस्ता धार्मिकी विदुषी माता विद्यते यस्य स मातृमान्'।** धन्य! वह माता है कि जो गर्भाधान से लेकर जब तक पूरी विद्या न हो, तब तक सुशीलता का उपदेश करे।

-स्वामी दयानन्द सरस्वती

जब बच्चा इस दुनिया में आता है तो उसकी चेतना कोरे कागज जैसी होती है। दुनिया की हर चीज उसके लिए नई होती है। उसका कोमल स्वभाव कदम-कदम पर ठोकरें खाता

है। उसकी चेतना हर जगह सौन्दर्य-सामञ्जस्य आदि ही देखना चाहती है, पर उसे दिखाई क्या देता है? माँ-बाप के झगड़े, लोगों के बुरे व्यवहार। वह विद्यालय जाता है, वहाँ भी वही किस्सा। वह जिन लोगों को मान की दृष्टि से देखता है, उनमें छेद ही छेद हैं। वह जिसकी ओर नजर डालता है उसी के अन्दर ऐसी चीजें दिखाई देती हैं जिन्हें देखकर उसे चोट लगती है। इन सब चीजों को देखकर उसकी चेतना भी पथराती जाती है। वह यह मानने लग जाता है कि यही जीवन है। सत्य, सौन्दर्य, सद्व्यवहार आदि केवल पुस्तकों के लिए है, सफल जीवन में इनके लिए कोई स्थान नहीं है। एक बार इस तरह के विचार बैठ जाते हैं तो बालक उस दिशा में अति शुरू कर देता है। उसके पास उपयोगिता, आवश्यकता आदि के माप तो होते नहीं, वह यही मान लेता है कि चालाकी, धूर्तता आदि ही जीवन को सफल बनाने वाली चीजें हैं, इनमें ही पारंगत होना चाहिए।

बालक के अन्दर विश्वास का तत्व बहुत मजबूत होता है। उसे माँ-बाप पर विश्वास होता है, बड़े भाई-बहिन पर विश्वास करता है, अध्यापकों पर विश्वास होता है। परन्तु यह विश्वास कांच की तरह नाजुक होता है जिसमें जरा-सी ठेस से तरेड़ आ जाती है। बालक का विश्वास ही उससे उनके साहस भरे कार्य करवा सकता है, शरीर को स्वस्थ और सक्षम रखता है और असंभव को संभव बना सकता है। जैसे-जैसे आयु बढ़ती है, वैसे-वैसे बड़ों के गुण, सावधानी, सतर्कता, सुरक्षा के भाव उसके अन्दर आते जाते हैं और शरीर में भय घर कर लेता है। जहाँ बालक टूटी हड्डी के साथ भी खेलकूद में रह सकता है वहाँ बड़े होकर जरा-सी खरोंच पर भी दवाई और पट्टी की जरूरत पड़ती है। जो बच्चों का भला चाहते हैं उन्हें बच्चों को बहुत ज्यादा सावधान और सतर्क या समझदार बनाने का प्रयास नहीं करना चाहिए,

बल्कि उनकी जीवनशक्ति ठीक पटरी पर बैठा देनी चाहिए जिससे दुर्घटना भी न हो और शक्ति का अपव्यय भी न हो। अध्यापकों और परिवार के बड़ों को हमेशा इस बात का ख्याल रखना चाहिए कि बच्चों के आगे कभी गप्प न हांकें। झूठी बात का उन पर बड़ा बुरा असर होता है। बच्चे नाना प्रकार के ऊंटपटांग प्रश्न करते हैं। अगर हमने गलत उत्तर दे दिया तो एक न एक दिन तो बच्चे को पता लग ही जायेगा। वह इसके लिए हमें कभी क्षमा नहीं करेगा, हमारे लिए उसके मन में मान न रहेगा। इससे अच्छा है कि कह दें 'मुझे नहीं मालूम'। बच्चा प्रश्नों की झड़ी लगा दे तो भी धीरज बनाए रखिए। क्रोध बच्चों के नाजुक हृदय की कली को चोट पहुँचाएगा और उसके मन में हमारे लिए एक प्रकार की घृणा-सी हो जाएगी। अतः बच्चों के साथ व्यवहार या वार्तालाप करते समय अत्यन्त सावधानी की आवश्यकता है। उसके कोमल मनोभाव व विश्वास को ठेस न पहुँचे इसकी चिन्ता प्रत्येक माता-पिता और गुरु को करनी चाहिए।

ज्ञानेन्द्रियाँ ही ज्ञान के द्वार हैं। ज्ञानेन्द्रियों द्वारा प्राप्त ज्ञान से बालक के अन्तःकरण का विकास होता है। अन्तःकरण का विश्वास करें, क्योंकि इसके माध्यम से परमेश्वर हमारा दिशा निर्देशन करता है। अन्तःकरण भावों को सजाता, संवारता और संस्कारित करता है। इसके विकास का माध्यम क्या हो? एकात्मता अनुभूति का विषय है, बौद्धिक व्यायाम नहीं।

इसका सम्बन्ध स्वाध्याय अध्ययन, पांडित्य से नहीं अपितु

भावों के जागरण एवं उनके परिमार्जन से है। इसकी विधि क्या हो? माता बालक के अन्तःकरण को विकसित करने के लिए क्या करें? गुरु अपने पाठ्यक्रम में इसका समावेश कैसे करें? इस समस्या का उत्तर है- कथा कहानी। कथा भाव-धारा को जन्म देती है, श्रोता उसके रसास्वादन में तन्मय हो जाता है। भावों का शोधन परिमार्जन होता है, प्रवृत्तियों का मार्गान्तरीकरण होता है तथा कृतियाँ स्वतः ही इससे प्रभावित होती हैं। इसी कारण बालशिक्षा का मुख्य आधार कथा है।

भारतीय जनजीवन में कथा का महत्व अत्यधिक दीख पड़ता है। अध्यात्म विषय गूढ़ है, शुष्क है, नीरस है परन्तु इस देश के मनीषियों ने इसे अपढ़ मूर्ख, सामान्य से सामान्य व्यक्ति के जीवन में सफलतापूर्वक उतार कर दिखला दिया है। भिखारी दान माँगते समय भौतिक समृद्धि की नश्वरता और पुण्य के अक्षय लाभ की चर्चा करता है, तो नारी सतीत्व की, और जन सामान्य पाप-पुण्य की, धर्म-अधर्म की चर्चा करता दिखता है। यह ज्ञान उसे किस विधि से दिया गया? उत्तर है-

कथा-कहानी। रामायण, महाभारत, उपनिषद् आदि सब कथा संग्रह ही तो हैं। भारतीय कथा साहित्य जगत् को अनुपम देन है। अतः बालक के अन्तःकरण के विकास के लिए सफल कथाकार बनें यह आज की महती आवश्यकता है।

कथा कैसी हो? कैसे कही जावे? कथा की प्रथम शर्त है कि वह अत्यन्त भावपूर्ण हो। उसे सुनते-सुनते बालक उसमें तन्मय हो जावे। यह एकाग्रता उसकी मानसिक शक्तियों को उजागर कर देगी। उत्सुकता, ग्राह्यशक्ति, कल्पनाशक्ति धधक उठेगी। भावयुक्त होने के साथ-साथ कथा की भाषा श्रोता के मानसिक स्तर की होना आवश्यक है। बालक के मानसिक स्तर के अनुरूप कथा का चयन तथा प्रस्तुतीकरण की भाषा अत्यावश्यक है। कथा की तीसरी विशेषता होनी चाहिए कथा का निष्कर्षयुक्त होना। निष्कर्षहीन कथाएँ कहना निरर्थक है। केवल मनोरंजन, वेदनायुक्त अथवा सुखान्त की श्रेणियों में आबद्ध करके कहना घातक होगा। इसलिए अपने देश में विचारोत्तेजक गुण प्रधान बोध कथाएँ, आदि कहने की परम्परा विद्यमान है। निरक्षर हिन्दू स्त्रियाँ भी उन्हें जानती हैं। पंचतंत्र, हितोपदेश की अमर कथाएँ, रामायण व महाभारत की कथाएँ उनके जीते जागते उदाहरण हैं। बच्चों के स्तरानुकूल दादी-नानी के द्वारा कहे जाने वाली पशु-पक्षियों एवं परियों की कहानियाँ हम सबों ने बचपन में

सुनी होंगी। कथाओं की उत्सुकता बनाये रखने के लिए उसमें तारतम्यता एवं अखण्डता भी होना चाहिए। कथा से कथा निकलती रहे तो कथा धारा-प्रवाह, अखण्ड, अविभाज्य बन जायेगी तथा उसके स्मृतिचिह्न बालक के मानसपटल पर अमिट प्रभाव अंकित कर देंगे। इससे उसके चरित्र में निखार आयेगा।

सद्गुणों के इस विकास क्रम में बालक के हृदय में पूर्वजों और परम्पराओं के प्रति स्वाभिमान भाव का जागरण अत्यन्त ही महत्वपूर्ण है। अतः महापुरुषों के जीवन प्रसंगों को सुनाना उपयोगी रहेगा।

ऐतिहासिक घटनाक्रम जहाँ उनके निकट पहुँचता है वहीं प्रेरक प्रसंग उनके प्रति श्रद्धा उत्पन्न कर देता है। वे महापुरुष थे। हम सामान्य हैं। हम यह कैसे कर सकेंगे? यह भाव मन में व्याप्त न हो अतः सामान्य व्यक्तियों के द्वारा असामान्य कार्य्यों के सम्पादन की कथा कहना अपना अलग ही प्रभाव छोड़ती है। इस प्रकार कथा के द्वारा बालक के अन्तःकरण को विकसित कर उसमें मानवता का तत्व विकसित करना माता पिता व गुरु का परम कर्तव्य है।

विश्वास ही बच्चों के व्यक्तित्व को सजाते सँवारते हैं, बच्चों को सुरक्षित रखते हैं। बच्चों के सम्बन्ध में अभिभावकों को अनावश्यक रूप से चिन्तित होने से बचाते हैं। इस सम्बन्ध में व्यावहारिक आदर्श है कि प्रारम्भ से ही बच्चों में विश्वास पैदा करें। उन्हें विश्वास में लें। बच्चों के लाड़-प्यार से वशीभूत होकर जो अभिभावक बच्चों की उचित-अनुचित फरमाइशें पूरी करते हैं, बच्चों के दुराग्रहों के सामने समर्पित होते हैं अथवा बच्चों के अनुचित व्यवहारों को अनदेखा करते हैं, अपनी पारिवारिक सीमाओं से ऊपर बच्चों की महत्वाकांक्षाओं को बढ़ने देते हैं वे ही कालान्तर में पश्चाताप करते हैं। इसलिए माता पिता को चाहिए कि बच्चों को सदैव जीवन की वास्तविकताओं से परिचित कराते रहें। अभावों पर विजय प्राप्त करने के लिए सदैव संघर्षरत रहें और बच्चों को अपना सहयोगी बनायें।

बच्चों में कैसे विश्वास पैदा करें? बच्चों में विश्वास पैदा करने का सरल उपाय यह है कि बच्चों से ऐसी कोई बात न कहें जिसे आप पूरा न कर सकते हों। झूठी बात, बनावटी आचरण झूठे आश्वासन बच्चों को न दें। यहाँ तक कि दूसरों से भी इस प्रकार का आचरण न करें। हमेशा ऐसी बातें कहें जिन्हें आप पूरा कर सकते हों। अतः बच्चों से किए गए वायदे पूरे करें। अपने किसी भी आचरण के लिए बच्चों की उपस्थिति को महत्व दें। बच्चों में निहित क्षमताओं पर विश्वास करें, उन्हें कार्य करने के लिए प्रेरित करें। ऐसे कार्यों में अभिभावक स्वयं बच्चों के साथ रहें। बच्चों को अयोग्य, छोटा, कमजोर, नासमझ मानना उचित नहीं। अतः बच्चों को अप्रशिक्षित शुद्ध जीवात्मा मानकर उसे सुनियोजित ढंग से प्रशिक्षित कर '**मातृमान् पितृमानाचार्यवान् पुरुषो वेद**' को चरितार्थ करें।

- आचार्य उमाशंकर शास्त्री
प्राचार्य, महर्षि दयानन्द सरस्वती, बाल मंदिर तेघड़ा,
बेगूसराय (बिहार), मोबाइल ०९९०५४१६८९९

हम हैं नन्हे वीर सिपाही

हम हैं नन्हे वीर सिपाही,
भारत देश विशाल के।
हमीं मुकुट हैं मणियों वाले,
इसके उज्ज्वल भाल के।
छोटा मत समझो हमको,
हम उजियाले के दीप हैं
हर मुश्किल को झेला हमने,
नन्ही हंसी उछाल के।
पर्वत, दरिया तूफानों के,
बीच पला अपना साहस
नहीं कभी घर छिपकर बैठे,
बाधाओं को टाल के
मोती माणिक से गूथेंगे,
हम जयमाला देश की,
चमचम मोती ले आएंगे,
सारा सिंधु खंगाल के
लो सब कुछ कुर्बान किया,
आदर्शों की लीक पर
ऊँची मर्यादा भारत की,
रखनी हमें सँभाल के।

-कवि प्रकाश मनु, साभार- कविता कोश-

प्रेरणा

दिव्यांगों के लिए ही नहीं सकलांगों के लिए भी अद्वितीय प्रेरणास्रोत हैं

निक वुजिसिक

सीताराम गुप्ता

यदि कोई बच्चा विकलांग ही पैदा हो तो उसके माता-पिता पर क्या बीतेगी इसका अनुमान लगाना कठिन नहीं। ऐसी स्थिति में हर कोई निराशा से भर उठेगा और अपनी किस्मत के साथ-साथ भगवान को भी कोसने लगेगा। हर कोई यही कहेगा कि ऐसे बच्चे के तो पैदा होते ही उसका मर जाना अच्छा। निक के जन्म के समय उसके माता-पिता की भी बिल्कुल यही मनोदशा थी। जब निक पैदा हुआ तो वो स्वस्थ होते हुए भी पूर्णतः अपूर्ण था क्योंकि न तो उसके हाथ ही थे और न पैर ही। बचपन में गाँव में कई बार सुनने में आता था कि किसी के यहाँ ऐसा बच्चा पैदा हुआ है जिसके हाथ-पैर ही नहीं हैं। ऐसे बच्चे देर तक जीवित नहीं रह पाते थे। आज सोचता हूँ तो ऐसा लगता है कि जीवित नहीं रह पाते थे ऐसा नहीं था अपितु इस डर से कि ये कैसे पले-बढ़ेगा और जीवन व्यतीत करेगा उसे जीवित ही नहीं रहने दिया जाता था। सभांवना यही है कि ऐसे बच्चों को जन्म के बाद या तो मार दिया जाता होगा या मरने के लिए भूखा छोड़ दिया जाता होगा। यह असंभव नहीं क्योंकि जहाँ सर्वांग सम्पूर्ण व स्वस्थ बालिकाओं तक को नहीं बख्शा जाता वहाँ एक पूर्णतः विकलांग के साथ तो क्या कुछ नहीं किया जा सकता है? लेकिन उपेक्षा के बावजूद निक के साथ ऐसा कुछ नहीं हुआ।

ये निक कौन है जिसकी चर्चा की जा रही है? निक का पूरा नाम निकोलस जेम्स वुजिसिक है। निक का जन्म चार दिसम्बर सन् १९८२ को ऑस्ट्रेलिया के मेलबर्न में हुआ था। उनके पिता बोरिस्लाव वुजिसिक तथा माँ दुशांका वुजिसिक मूल रूप से यूगोस्लाविया के सर्बिया के थे और यहाँ ऑस्ट्रेलिया में आ बसे थे। ऑस्ट्रेलिया में बोरिस्लाव वुजिसिक एक अकाउण्टेंट के तौर पर काम करने लगे तथा दुशांका वुजिसिक बच्चों के एक हॉस्पीटल में नर्स बन गईं। जन्म के समय टेट्रा अमेलिया सिंड्रोम के कारण निक के हाथ-पैर पूरी तरह से गायब थे। टेट्रा अमेलिया सिंड्रोम से पीड़ित इस समय पूरे विश्व में केवल सात ही व्यक्ति जिन्दा हैं जिनमें से निक एक हैं। निक के जन्म के समय जब नर्स उसे लेकर उसकी माँ के पास आई तो उसने उसे लेने से ही नहीं देखने तक से मना कर दिया। लेकिन बाद में माता-पिता ने परिस्थितियों को स्वीकार कर लिया और निक की परवरिश में लग गए।

निक के जन्म के समय उसके केवल एक पैर के स्थान पर कुछ जुड़ी हुई उँगलियाँ मात्र थीं। डॉक्टरों ने ऑपरेशन करके निक की उँगलियों को अलग-अलग कर दिया ताकि वो उनकी सहायता से हाथों की उँगलियों की तरह चीजों को पकड़ने, पुस्तकों के पन्ने पलटने व दूसरे बहुत जरूरी कार्य किसी तरह से कर सकें। आज निक इधर-उधर जाने के लिए इलैक्ट्रिक व्हील चेयर का इस्तेमाल करते हैं। चाहे इलैक्ट्रिक व्हील चेयर से कहीं जाना हो अथवा कम्प्यूटर या मोबाइल फोन का प्रयोग करना हो निक अपने पैर की उँगलियों से ही सारा काम करते हैं।

सोचिए निक को ये सब सीखने और करने में कितना कष्ट हुआ होगा। यदि किसी के दोनों पैरों में थोड़ा सा भी अन्तर हो जाए तो आदमी बिना लंगड़ाए नहीं चल सकता। निक ने कैसे बिना पैरों के शरीर का संतुलन साधना सीखा होगा व कैसे बिना हाथों के काम करना? परेशानियाँ तो एक अच्छे-खासे स्वस्थ व्यक्ति को तोड़कर रख देती है। निक को पढ़ाई, खेल-कूद व अपने रोजमर्रा के काम करने में बड़ी परेशानी होती थी। स्कूल में बच्चे भी उसका मजाक उड़ाते थे। इन सब चीजों से मायूस व दुःखी होकर दस वर्ष की उम्र

में एक बार निक ने पानी के टब में डूबकर आत्महत्या तक करने की कोशिश की लेकिन उसके माता-पिता के प्यार और प्रोत्साहन ने उसे आगे बढ़ने का हौंसला प्रदान किया।

निक के माता-पिता उसे हर तरह से आत्मनिर्भर बनाना चाहते थे। डेढ़ साल की उम्र से ही निक के माता-पिता उसे पानी के टब में छोड़ने लगे ताकि वो तैरना सीख सके। छह साल की उम्र में उसे पंजे की सहायता से टाइप करना सिखाने लगे। विशेषज्ञों की मदद से उन्होंने उसके लिए प्लास्टिक का ऐसा डिवाइस बनवाया जिनकी सहायता से निक ने पैंसिल व पैन पकड़ना व लिखना सीखा। निक के माता-पिता ने निक को स्पेशल स्कूल में भेजने से मना कर दिया। वो चाहते थे कि निक सामान्य स्कूल में सामान्य बच्चों के साथ ही पढ़े। इसमें बहुत सी मुश्किलें आईं लेकिन उन्होंने हार नहीं मानी। सामान्य बच्चों के साथ पढ़ने-लिखने और काम करने का ये लाभ हुआ कि निक उन्हीं की तरह काम करने लगे। पंजे की सहायता से निक ने न केवल पढ़ना-लिखना सीखा अपितु फुटबॉल और गोल्फ खेलना व तैरना भी सीखा। निक पंजे की सहायता से ही न केवल ड्रम

बजा लते हैं अपितु मछली पकड़ना, पेंटिंग व स्काई डाइविंग तक कर लते हैं। मुँह की सहायता से गियर बदलकर निक कार भी आसानी से चला लेते हैं।

जब निक तेरह साल के थे तो एक दिन उनकी माँ ने अखबार में प्रकाशित एक लेख निक को पढ़कर सुनाया जिसमें एक विकलांग व्यक्ति के संघर्ष और सफलता की कहानी थी। निक को अहसास हुआ कि दुनिया में वो अकेला विकलांग नहीं है और परिश्रम व संघर्ष द्वारा आगे बढ़ा जा सकता है। उसके बाद उसके जीवन की दिशा ही बदल गई। उसे महसूस हुआ कि ईश्वर ने उसे कुछ अलग करने के लिए ही ऐसी स्थिति में डाला है। उसे तो स्वयं लोगों की प्रेरणा व प्रोत्साहन की जरूरत थी लेकिन उसने संकल्प लिया कि वो स्वयं लोगों को प्रेरणा व प्रोत्साहन प्रदान करेगा जिससे लोगों में व्याप्त निराशा व अकर्मण्यता दूर हो सके और वे उत्साहपूर्वक कार्य करते हुए अच्छी तरह से जीवन व्यतीत कर सकें।

सत्रह साल की उम्र में निक ने एक प्रेरक वक्ता के रूप में कार्य करना प्रारम्भ कर दिया। इक्कीस वर्ष की उम्र में निक ने अकाउण्टिंग व फाइनेन्स में ग्रेजुएशन किया। बाद में 'एटिट्यूड इज़ एल्टिट्यूड' नाम से एक कंपनी खोली और एक प्रेरक वक्ता के रूप में कार्य करने लगे। आज निक विश्व के एक प्रमुख सफल प्रेरक वक्ता के रूप में जाने जाते हैं। वो चालीस से अधिक देशों में अपने कार्यक्रम दे चुके हैं।

निक अपने कार्यक्रम के लिए जहाँ भी पहुँचते हैं हाल खचाखच भरे होते हैं। निक आजकल अपनी पत्नी और बच्चों के साथ अमेरिका के कैलिफोर्निया में रह रहे हैं और अत्यन्त संतुष्ट जीवन व्यतीत कर रहे हैं जो उनकी सकारात्मक सोच व संघर्ष का ही परिणाम है। जो लोग जीवन में छोटी-छोटी परेशानियों से हार मानकर संघर्ष करना छोड़ देते हैं उनके लिए निक के प्रेरक वक्तव्य ही नहीं निक का अपना जीवन संघर्ष भी कम प्रेरणास्पद नहीं। निक के जीवन से सीख लेने की सबसे महत्त्वपूर्ण बात ये है कि जब निक जैसा बिना हाथों व पैरों का व्यक्ति जीवन में इतनी ऊँचाई तक पहुँच सकता है तो एक सामान्य व्यक्ति क्यों नहीं?

ए.डी.-१०६-सी,
पीतमपुरा, नई दिल्ली- ११००३४

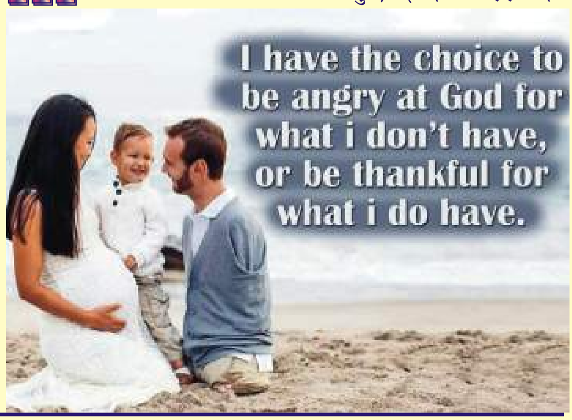

अविद्या का नाश और विद्या की वृद्धि करनी चाहिए

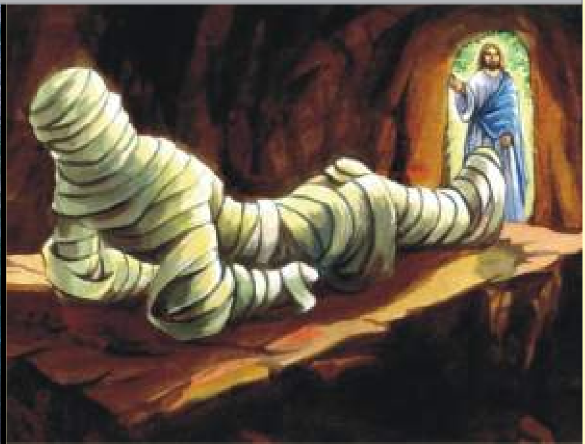

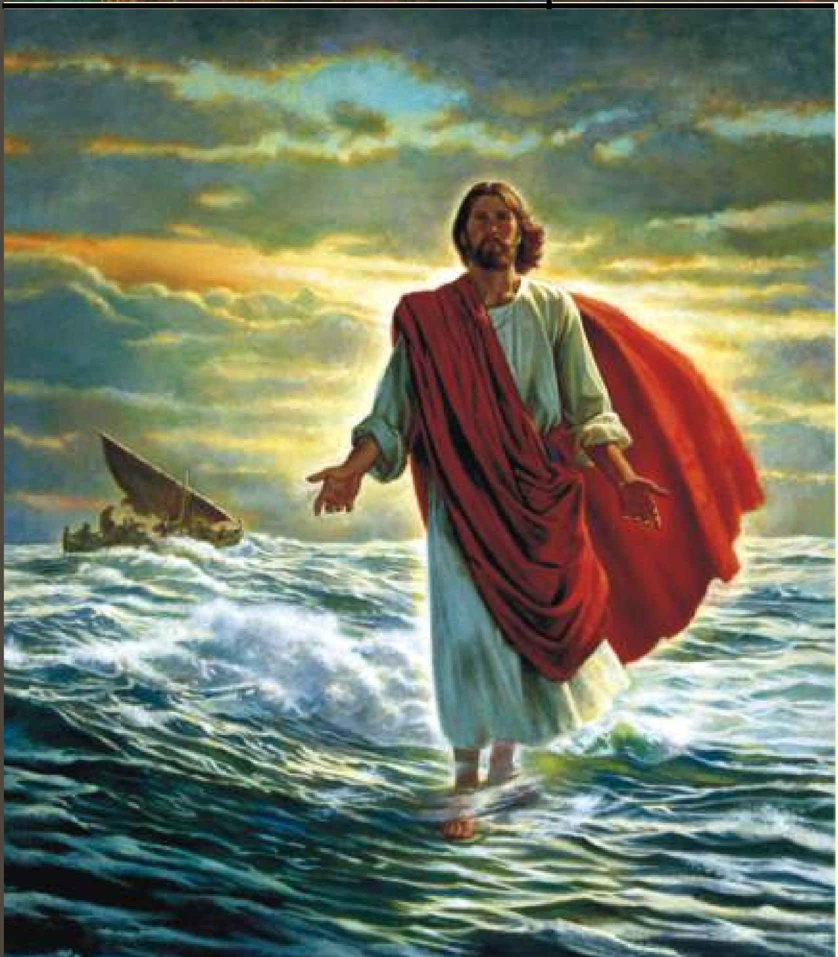

कोई कहे कि ''माता-पिता के बिना सन्तानोत्पत्ति, किसी ने मृतक जिलाये, पहाड़ उठाये, समुद्र में पत्थर तराये, चन्द्रमा के टुकड़े किये, परमेश्वर का अवतार हुआ, मनुष्य के सींग देखे और वन्ध्या के पुत्र और पुत्री का विवाह किया'' इत्यादि सब असम्भव हैं, क्योंकि ये सब बातें सृष्टिक्रम से विरुद्ध हैं। जो बात सृष्टिक्रम के अनुकूल हो, वही सम्भव है।।

- सत्यार्थप्रकाश तृतीय समुल्लास

इस हेतु अमर ग्रन्थ सत्यार्थप्रकाश एक बार अवश्य पढ़ें।

दृष्टिकोण

समान नागरिक संहिता

कुमार वहीद नकवी

जो बहस पचास-साठ साल पहले खत्म हो जानी चाहिए थी, हम आज तक उसे शुरू ही नहीं कर पाये हैं। वह बात हो गयी होती तो देश अब तक जाने कहाँ आगे बढ़ गया होता। इस तरह धार्मिक पहचानों में फँसा-धँसा न होता। ऐसी अल्लम-गल्लम लंतरानियाँ न सुनने को मिलतीं, शायद तब ऐसी जमीन ही न मौजूद होती कि धर्म के नाम पर फसलें काटी जा सकतीं, शायद तब पुराने जमानों को आज इक्कीसवीं सदी में खींच लाने की वकालत कर सकने की बात भी कोई न सोचता।

तब बदल गयी होती सोच

और तब शायद गोद लेने के नये नियमों को लेकर आज 'मिशनरीज ऑफ चैरिटी' (Missionaries of Charity) के सामने आस्था का संकट न खड़ा हुआ होता। तब शायद ससुर के बलात्कार की शिकार इमराना और आरिफ-गुड़िया-तौफीक के मामलों का फैसला फतवों से नहीं, कानून से होता। तब शायद खाप पंचायतों के पास भी संस्कृति और परम्परओं का बहाना न होता, अगर हमने कॉमन सिविल कोड (Uniform Civil Code) को अपना लिया होता। तब शायद हम अब तक वाकई बहुत आधुनिक देश बन गये होते, हर मामले में बराबरी का समाज बना पाने की तरफ हम तेजी से आगे बढ़े होते, पोंगापंथ को न तर्क मिल पाते और न धर्म के नाम पर लोगों को हाँका-भड़काया जा सकता था। कॉमन सिविल कोड ने देश और समाज की तस्वीर और सोच बदल दी होती।

मिशनरीज ऑफ चैरिटीज की बात पर हैरानी

बताइए, हैरानी होती है कि आज के जमाने में 'मिशनरीज ऑफ चैरिटी' (Missionaries of Charity) को यह बात स्वीकार नहीं कि कोई अकेला व्यक्ति बच्चे को गोद ले सकता है। इसमें उनका धर्म आड़े आ जाता है। उनका कहना है कि ईसाई धर्म के अनुसार केवल विवाहित दम्पति को ही बच्चों को गोद दिया जा सकता है। उन्हें आशंका है कि अकेले रहनेवाले पुरुष या महिला समलैंगिक भी हो सकते हैं और उनके हाथों में बच्चे को सौंपना धर्म-विरुद्ध होगा। क्योंकि ईसाई धार्मिक मान्यताओं में समलैंगिकता का पूरी तरह निषेध है।

अजीब हास्यास्पद तर्क है! इस बात की क्या गारण्टी है कि आज विवाहित दम्पति बच्चे को गोद लेने के बाद कल को तलाक, मृत्यु या किसी विवाद के चलते अकेले नहीं हो जायेंगे? और विवाहित होना क्या समलैंगिक न होने की गारण्टी देता है? क्या विवाहित लोग विवाहेतर समलैंगिक रिश्ते नहीं बना सकते? या भविष्य में विवाह-विच्छेद होने पर वे कभी समलैंगिक रुझान की तरफ नहीं बढ़े सकते? आज की नयी अर्थव्यवस्था और सामाजिक संरचना में जब दुनिया भर में महिलाओं और पुरुषों के बीच नौकरी, रोजगार, कारोबार, घर-परिवार में निजी आजादी को लेकर रिश्ते नये सिरे से परिभाषित हो रहे हैं, वहाँ चीजों को सदियों पुराने धार्मिक चश्मों से कैसे देखा जा सकता है?

सुप्रीम कोर्ट का सवाल

मिशनरीज ऑफ चैरिटीज का यह विवाद बड़े मौके से खड़ा हुआ है, जब इसी हफ्ते सुप्रीम कोर्ट ने सरकार से पूछा है कि

कॉमन सिविल कोड (Uniform Civil Code) लाने के बारे में उसका नजरिया क्या है? देश की अदालतें पहले भी कई बार कॉमन सिविल कोड की जरूरत पर जोर देती रही हैं। लेकिन अब तक की तमाम सरकारें पर्सनल लॉ की उन

बेड़ियों को छेड़ने भर की कोशिशों से भी बचती रही हैं, जिन्हें अँग्रेज डाल गये थे। इसी का नतीजा है कि आज हिन्दुओं, सिखों, जैनियों, बौद्धों के लिए अलग हिन्दू कानून और मुसलमानों, ईसाइयों, पारसियों के लिए अलग-अलग पर्सनल लॉ लागू हैं। और जब भी इनकी जगह एक समान नागरिक संहिता (Uniform Civil Code) बनाने की बात होती है, बड़ा बखेड़ा खड़ा हो जाता है।

धर्म के नाम पर विरोध

आजादी के बाद जब प्रधानमंत्री जवाहरलाल नेहरू और कानून मंत्री बाबासाहेब अम्बेडकर ने कॉमन सिविल कोड (Uniform Civil Code) तैयार करने की कोशिश की तो मुसलिम नेताओं की घोर आपत्तियों के कारण उन्हें हाथ खींचना पड़ा। तब नेहरू को मजबूर होकर अपने आपको हिन्दू कोड बिल तक ही सीमित करना पड़ा, लेकिन तब भी बहुविवाह निषेध, महिलाओं को तलाक के अधिकार और अन्तर्जातीय विवाह जैसे कुछ मुद्दों पर उन्हें हिन्दूवादी संगठनों के कड़े विरोध का सामना करना पड़ा था।

हालाँकि उसके बाद से हिन्दुओं ने तो ज्यादातर सामाजिक सुधारों को स्वीकारना शुरु कर दिया, लेकिन मुसलमानों ने पर्सनल लॉ को 'धर्म की रक्षा' का सवाल बना कर अपनी अलग पहचान और अस्तित्व का मुद्दा बना लिया और वह उसमें किसी भी बदलाव का विरोध करते रहे। १९५८ का शाहबानो मामला इसकी चरम परिणति थी, जिसमें तत्कालीन प्रधानमंत्री राजीव गाँधी ने अगर कट्टरपंथी मुसलमानों के सामने घुटने न टेके होते तो आज शायद देश में आम मुसलमानों की स्थिति पहले से कहीं बेहतर होती।

मुसलमानों की कूढ़मगज जिद

मुसलमानों की उस कूढ़मगज जिद ने न सिर्फ तब आम हिन्दू मानस में क्षोभ पैदा किया, बल्कि हिन्दूवादी ताकतों को अपना आधार बढ़ाने के लिए नये तर्क भी दिये। इसी के बाद राम जन्मभूमि आन्दोलन ने जोर पकड़ना शुरू किया और आम हिन्दू इस बात से सहमत नजर आने लगा कि अगर शाहबानो मामला धार्मिक आस्था का सवाल है, तो राम मन्दिर भी धार्मिक आस्था का सवाल है। और शायद यह शाहबानो के जवाब में हुए 'हिन्दुत्व उदय' का ही नतीजा था कि सितम्बर १९८७ में राजस्थान के दिवराला में रूपकँवर के सती होने के बाद हिन्दुओं में सती प्रथा को फिर से महिमामंडित करने की कोशिश भी शुरू हुई, हालाँकि उसे बहुत समर्थन नहीं मिल पाया और आखिर अगले साल सती निरोधक कानून बन गया।

इतिहास की भूल से कुछ नहीं सीखा

दुर्भाग्य की बात है कि मुसलिम पर्सनल लॉ बोर्ड और मुसलिम उलेमाओं ने इतिहास की उस भूल से कुछ नहीं सीखा। इमराना और गुड़िया के मामलों में फिर वही कठमुल्ला रवैया अपनाया गया। एक बार में तीन तलाक को लेकर मुसलिम महिलाओं की पीड़ा को बोर्ड आज तक मानने-समझने को तैयार नहीं है। हिन्दू अगर सती प्रथा जैसी बुराई रोकने की जरूरत समझ सकते हैं तो मुसलमान 'तीन तलाक' जैसी चीज खत्म करने को क्यों तैयार नहीं होते?

कॉमन सिविल कोड नहीं है धार्मिक आस्था का सवाल

और उससे भी ज्यादा दुर्भाग्य की बात यही है कि अभी तक देश में कभी कॉमन सिविल कोड (Uniform Civil Code) पर गम्भीर चर्चा भी नहीं हुई। क्योंकि राजनीति ऐसा करने नहीं देती। क्योंकि धार्मिक आस्थाओं के नाम पर पर्सनल लॉ

से छेड़छाड़ न किये जाने का शोर उठने लगता है। लेकिन धार्मिक आस्थाओं का विवाह, तलाक, उत्तराधिकार, गोद लेने और महिलाओं के अधिकारों से क्या लेना-देना? यह सब धार्मिक प्रश्न कहाँ से हुए? यह सब सामाजिक सवाल हैं और जिनका हल सामाजिक पैमानों से ही ढूँढा जाना चाहिए, जो किसी एक समाज में अलग-अलग नहीं हो सकते।

यह लेख कुछ समय पूर्व का है। परन्तु मानसिकता के संदर्भ में सामयिक है। ट्रिपल तलाक पर सर्वोच्च न्यायालय का निर्णय आ चुका है। मुस्लिम धर्मगुरुओं को इसे दिल से स्वीकार करना चाहिए और सभी पूर्वाग्रहों को छोड़ कॉमन सिविल कोड के लागू होने की राह सहज बनानी चाहिए। - संपादक

अलग धर्म, अलग अधिकार की तुक नहीं !

लोकतंत्र में हर नागरिक बराबर है और उसके अधिकार भी बराबर हैं। ऐसे में धार्मिक आस्था के नाम पर कोई धर्म अपने समुदाय के लोगों को उन अधिकारों से वंचित नहीं कर सकता, यह बुनियादी बात है। पर्सनल लॉ हटने से अगर देश की हर महिला को समान अधिकार मिलते हैं, देश के हर बच्चे के लिए उत्तराधिकार के समान प्रावधान लागू होते हैं और हर व्यक्ति अगर समान तरीके से गोद ले सकता हो, तो इसमें धर्म बीच में कहाँ आता है? एक सेकुलर राज्य में हर धर्म के लोगों को अपने धर्म के अनुसार पूजा-पद्धति अपनाने, रीति-रिवाज, संस्कृति और धार्मिक प्रथाओं के पालन की स्वतंत्रता है और इसकी हर कीमत पर रक्षा भी होनी चाहिए। लोग अपनी-अपनी धार्मिक प्रथाओं से विवाह करें, बच्चे का नामकरण करें, अक्षर संस्कार करें, बिलकुल ठीक। लेकिन तलाक के बाद अलग-अलग धर्म की महिला के लिए मुआवजे के अलग-अलग धार्मिक आधार हों, यह बात कैसे सही मानी जाये?

पिंजड़े से बाहर निकलें मुसलमान

बहरहाल, कॉमन सिविल कोड (Uniform Civil Code) पर अब गम्भीरता से चर्चा होनी चाहिए। हाँ, यह अलग बात है कि इस समय माहौल ऐसी चर्चा के लिए बहुत अनुकूल नहीं है और अपनी घोषित नीति के बावजूद नरेन्द्र मोदी सरकार शायद इस मुद्दे को तुरन्त छेड़ना न चाहे, लेकिन इस पर खुले मन से चर्चा की जरूरत तो है। मुसलमानों को भी इस बारे में विवेक से सोचना चाहिए क्योंकि इसका सबसे ज्यादा विरोध अकसर उनकी ही तरफ से होता है।

दुर्भाग्य से मुसलिम समाज पर पुरातनपंथी तत्वों और धर्मगुरुओं की पकड़ बड़ी गहरी है। जिस दिन पर्सनल लॉ खत्म हो जायेगा, उस दिन बहुत-से मामलों का निपटारा फतवों से नहीं, कानून से होने लगेगा और मुसलिम समाज पर धर्मगुरुओं का नियंत्रण घटने लगेगा और उनकी भूमिका सिर्फ धार्मिक कार्यों और समारोहों तक ही सीमित रह जायेगी। यही कारण है कि धर्म और शरीअत की दुहाई देकर वे मुसलमानों को पिंजड़े में रख कर अपना वर्चस्व बनाये रखने की कोशिश करते हैं।

मुसलमानों को यह बात समझनी चाहिए और अब इस पिंजड़े से बाहर आना चाहिए। खुली हवा में उड़ान भरे बगैर तरक्की के आसमान भला कैसे छुआ जा सकता है?

साभार- रागदेश.कॉम

मेलबोर्न (आस्ट्रेलिया) की धरती से रोहिन्या प्रकरण पर डॉ. सारस्वत मोहन मनीषी द्वारा रचित कुछ दोहे

आज शारीरिक, मानसिक व्याधियों व उथल पुथल से मानव दुःखी है। बेचैनी, घबराहट अनिद्रा चिन्ता, भय ने मनुष्य को त्रस्त कर रखा है। नगर महानगरों में तो जीवन जैसे एक मशीन बन कर रह गया है। आज मनुष्य को अपना शरीर, बच्चों का बचपन व भविष्य देखने का भी समय नहीं है। प्रातः हुई, अंधेरे में ही बस-रेल द्वारा कार्यालय पहुँचना, रात्रि को घर आना, उधर कार्यालय आजाओ तो कार्यालय का भार, घर आओ तो घर के इतने कार्य कि पूरे ही नहीं हो पाते। उधर अनेक प्रकार की चिन्ताएँ मनुष्य के जीवन को कठिनतम बना रही हैं। जीवन व्यस्त से अधिक व्यस्त हो गया है। ऐसे में मन-मस्तिष्क को थोड़ी शान्ति चाहिए। वह शान्ति योग से ही मिल सकती है। यही तो हमारे ऋषियों की देन है। यही विद्या है जो हमें अनेक रोगों से दूर कर सकती है।

योग का सीधा सा अर्थ है जुड़ना अर्थात् परमात्मा से जुड़ना। यह परमात्मा से समीप होना, आत्मा का परमात्मा से मिलन उस अलौकिक आनन्द की प्राप्ति है जो परमात्मा से ही मिलता है।

महर्षि पतंजलि के अनुसार-

योगश्चित्तवृत्ति निरोधः

अर्थात् चित्त-वृत्तियों का निरोध करना ही योग है। मनुष्य का मन चंचल है। अभी यहाँ, थोड़ी देर में वहाँ। कभी कोई विचार, कभी कोई, मन में आता ही रहता है। मन इन्द्रियों से, इन्द्रियाँ अपने-अपने विषयों से लगी रहती हैं। मनुष्य लोभ-लालच, तेरा-मेरा, ईर्ष्या-द्वेष आदि में फंसा रहता है। मोह ममता पीछा नहीं छोड़ती भले ही वह प्रत्येक दिन वातानुकूलित में रहता हो, स्वादिष्ट भोजन करता हो, कोठी बंगले में रहता हो, स्त्री-बेटे-बेटी हों। वह सोचता है यही सब कुछ है सुख है, परन्तु धन दौलत अथाह भी मिल जाय फिर भी वह सुखी नहीं रहता। फिर भी जीवन में कुछ और पाने की इच्छा बनी रहती है। परन्तु मनुष्य भ्रमवश स्त्री, सन्तान, भवन, स्वर्णाभूषण, गाड़ी आदि को ही पाने का प्रयत्न करता है, परन्तु प्यास नहीं बुझती। यदि मानव को ज्ञान का प्रकाश मिल जाय तो वह प्यास आत्मा के परमात्मा के समीप जाने व जुड़ने से ही बुझती है। परमात्मा के पास जाने से एक अलौकिक आनन्द की प्राप्ति होती है। जिसके आगे यदि धरती का सम्पूर्ण धन-दौलत भी मिल जाय तो भी कुछ नहीं। परमात्मा के उस मिलन में संतोष है, अलौकिक आनन्द है। और वह मिलता है योग से।

परमात्मा के उस अलौकिक आनन्द को प्राप्त करने हेतु शरीर, मन व आत्मा को निर्मल बनाना होगा। योग के आठ अंगों का पालन करना होगा। योग के आठ अंग हैं-

यम, नियम, आसन, प्राणायाम, प्रत्याहार, धारणा, ध्यान और समाधि।

यूँ समझ लें कि ईश्वर के समीपस्थ होने हेतु यह आठ सीढ़ियाँ हैं। जैसे-जैसे एक-एक सीढ़ी चढ़ते जायेंगे परमात्मा की समीपता होती जायेगी और परमात्मा के उस दिव्य ज्योतिर्मय अलौकिक आनन्द की प्राप्ति होती जायेगी।

हमें अपने मन को निर्मल बनाना है। सारी दुविधा मन की ही होती है। हमारा मन करने लगा चटपटी या मीठी वस्तु खाने का पेट भर खा लिया। स्वादिष्ट व्यंजन मिले दबाकर खा लिए। हो गये बीमार। शरीर हो गया रोगी। मन कामुकता की की ओर बढ़ गया। मन कहने लगा घूमने चलो, गाड़ी तेज दौड़ाओ। गाड़ी इतनी तेज दौड़ायी कि सामने से कोई वाहन आता दिखाई ही नहीं दिया। संभल नहीं पाये। फिर आमने सामने क्या हुआ सोच सकते हैं। हम मन के विषय में हो जाते हैं तो मन तो इन्द्रियों से लगा है; इन्द्रियाँ अपने वश में लगी हैं पता नहीं क्या करा दें कहीं लड़ाई, कहीं झगड़ा, व्यभिचार, ईर्ष्या, वैमनस्य। विश्व में जितने भी अच्छे बुरे कर्म हैं मन से ही तो हैं। मनुष्य विषय भोगों में फंस जाता है अतः हमें मन के वश में नहीं होना चाहिए अपितु मन हमारे वश में होना चाहिए।

इसीलिए मन को वश में रखने को ईश्वर से प्रार्थना है-

येनेदं भूतं भुवनं भविष्यत्परिगृहीतममृतेन सर्वम्।
येन यज्ञस्तायते सप्तहोता तन्मे मनः शिवसंकल्पमस्तु।।

- यजुर्वेद अ. ३४/४

अर्थात् हे जगदीश्वर! जिससे सब योगी लोग इन सब भूत, भविष्यत्, वर्त्तमान व्यवहारों को जानते, जो नाशरहित जीवात्मा को परमात्मा के साथ मिलाके सब प्रकार त्रिकालज्ञ करता है, जिस में ज्ञान और क्रिया है, पाँच ज्ञानेन्द्रिय बुद्धि और आत्मायुक्त रहता है, उस योगरूप यज्ञ को जिससे बढ़ाते हैं, वह मेरा मन योग-विज्ञानयुक्त होकर अविद्यादि क्लेशों से पृथक् रहै। - स.प्र.सप्तम समुल्लास

ऋषियों ने मन पर नियंत्रण हेतु ही बल दिया है। मन पर नियंत्रण कर ही श्रेष्ठ मार्ग में चलाया जा सकता है। अधर्म से धर्म के मार्ग में ले जाया जा सकता है। मन को पवित्र करने की ईश्वर से प्रार्थना की गई है।

सुषारथिरश्वानिव यन्मनुष्यान्नेनीयतेऽभीशुभिर्वाजिनऽइव।
हृत्प्रतिष्ठं यदजिरं जविष्ठं तन्मे मनः शिवसंकल्पमस्तु।।

- यजुर्वेद अ. ३४/६

हे सर्वनियन्ता ईश्वर! जो मेरा मन रस्सी से घोड़ों के समान अथवा घोड़ों के नियन्ता सारथि के तुल्य मनुष्यों को अत्यन्त इधर-उधर डुलाता है, जो हृदय में प्रतिष्ठित गतिमान् और अत्यन्त वेग वाला है, वह सब इन्द्रियों को अधर्माचरण से रोक के धर्मपथ में सदा चलाया करे। ऐसी कृपा मुझ पर कीजिये। - स.प्र.सप्तम समुल्लास

ईश्वर की प्रार्थना-उपासना से मनुष्य का आत्मा और अन्तःकरण पवित्र होकर सत्य से पूर्ण हो जाता है। नित्यप्रति ज्ञान-विज्ञान बढ़कर मुक्ति तक पहुँच जाता है। 'जैसे शीत से आतुर पुरुष का अग्नि के पास जाने से शीत निवृत्त हो

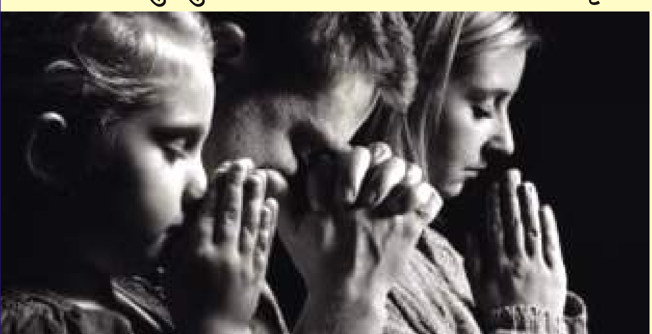

जाता है, वैसे परमेश्वर के समीप प्राप्त होने से सब दोष दुःख छूट कर परमेश्वर के गुण, कर्म, स्वभाव के सदृश जीवात्मा के गुण, कर्म, स्वभाव पवित्र हो जाते हैं। इसलिये परमेश्वर की स्तुति, प्रार्थना और उपासना अवश्य करनी चाहिये। इससे इसका फल पृथक् होगा। परन्तु आत्मा का बल इतना बढ़ेगा वह पर्वत के समान दुःख प्राप्त होने पर भी न घभरावेगा और सब को सहन कर सकेगा। - स.प्र.सप्तम समुल्लास

आज मनुष्य अत्यधिक कष्ट में है। भले ही वह कितना ही धनवान हो गया हो, आज शारीरिक रोग सामान्य हो गए हैं। एक तो जल, वायु, मृदा, रसायन, ध्वनि प्रदूषण से अनेक विकृतियाँ उत्पन्न हो रही हैं दूसरे अन्न, दूध, शाक आदि में कीटनाशक रसायनों, रसायनिक उर्वरकों का अत्यधिक प्रयोग होना। इनसे शरीर में हृदय, श्वास, मस्तिष्क, यकृत, उदर, त्वचा, मूत्र-रोग आदि बढ़कर कष्ट दे रहे हैं। उधर घर परिवार कार्यालय की व्यस्तताएँ अनियमितताएँ लड़ाई-झगड़ों से मानसिक व्यथा बढ़ रही है। इसके लिए नित्य प्रति प्रातः सायं हमें समय निकाल कर योग व योगाभ्यास अवश्य करना चाहिए। आज के व्यस्ततम जीवन में यह अत्यन्त आवश्यक है। आइये विश्व के लोगों के शारीरिक मानसिक स्वास्थ्य के लिए योग का सर्वत्र प्रचार करें। इसका शुद्ध व सम्यक् ज्ञान सबके लिए करें। करें योग-रहें निरोग।

- डॉ. विजेन्द्र पाल सिंह
चन्द्र लोक कॉलोनी, खुरजा-२०३१३१
मोबाइल- ८९९७९४७१५

बहुत जरूरी होती शिक्षा,
सारे अवगुण धोती शिक्षा।
चाहे जितना पढ़ लें हम पर,
कभी न पूरी होती शिक्षा।
शिक्षा पाकर ही बनते हैं,
नेता, अफसर शिक्षक।
वैज्ञानिक, यंत्री व्यापारी,
या साधारण रक्षक।
कर्तव्यों का बोध कराती,
अधिकारों का ज्ञान।
शिक्षा से ही मिल सकता है,
सर्वोपरि सम्मान।
बुद्धिहीन को बुद्धि देती,
अज्ञानी को ज्ञान।
शिक्षा से ही बन सकता है,
भारत देश महान्।

- डॉ. परशुराम शुक्ला

नारी सशक्तीकरण बनाम अशक्तीकरण

आकांक्षा यादव

राजनीति और प्रशासन दो ऐसे क्षेत्र हैं जो न सिर्फ नीति निर्माण करते हैं बल्कि उनका कार्यान्वयन भी सुनिश्चित करते हैं। यह पहली बार हुआ है जब भारतीय राजनीति में महिलाएँ शीर्ष पर स्थान बनाने में कामयाब हुई हैं। राष्ट्रपति प्रतिभा पाटिल (पूर्व) , लोकसभा अध्यक्ष मीरा कुमार, यूपीए अध्यक्ष सोनिया गाँधी, विदेश मंत्री सुषमा स्वराज, रक्षामन्त्री निर्मला सीतारमण के साथ साथ राजधानी दिल्ली में शीला दीक्षित, उत्तरप्रदेश में मायावती, पश्चिम बंगाल में ममता बनर्जी, तमिलनाडु में जयललिता, बिहार में राबड़ी देवी, राजस्थान में वसुन्धरा राजे इत्यादि महिलाएँ मुख्यमंत्री पद पर आसीन हैं या हो चुकी हैं। प्रशासनिक स्तर पर भी देखें तो महिलाएँ अहम् पदों पर पदस्थ हैं। आई.ए.एस. की परीक्षा में जहाँ महिलाओं ने शीर्ष स्थान हासिल किए हैं, वहीं सी.बी.एस.ई. द्वारा घोषित १०वीं व १२वीं के नतीजों में प्रायः हर साल लड़कियाँ ही बाजी मारती हैं। भारत में हर साल १.२५ महिलाएँ डॉक्टर की डिग्री प्राप्त करती हैं जो कि कुल उत्तीर्ण छात्रों का पचास प्रतिशत है। भारत की ६.३८ लाख पंचायतों में से ७७२१० की अध्यक्षता महिलाएँ कर रही हैं। एक लम्बे समय बाद ही देश के सर्वोच्च न्यायालय में भी महिलाओं की भागीदारी दिख रही है। कॉरपोरेट जगत् में भी तमाम महिलाएँ शीर्ष पदों पर हैं।

"नारी के अस्तित्व पर ही सृष्टि टिकी हुई है"

उपरोक्त स्थिति देखकर किसी को भी भ्रम हो सकता है कि भारत में नारी सशक्तीकरण चरम पर है और महिलाएँ न सिर्फ घर चला सकती हैं बल्कि देश भी चला रही हैं। पर क्या वाकई ऐसा है या यह उपस्थिति प्रतीकात्मक मात्र है।

राजनीतिक स्तर पर ऊपरी तौर पर भले ही महिला प्रतिनिधित्व एक गुलाबी तस्वीर पेश करता है पर असलियत यह है कि भारत में लोकसभा में महिलाओं को सिर्फ ग्यारह फीसदी और राज्यसभा में १०.७ फीसदी प्रतिनिधित्व है। अन्तर्राष्ट्रीय समूह इन्टर पार्लियामेंटरी यूनियन आई.पी.यू द्वारा जनवरी २०१४ में जारी किए गए आंकड़ों के अनुसार भारत का राजनीति में महिलाओं की भागीदारी के मामले में ९८वाँ स्थान है। यहाँ आखिर यूँ ही ३३ फीसदी आरक्षण की माँग नहीं हो रही है। समाज के दलित-पिछड़े वर्ग से आने वाली महिला प्रतिनिधियों के साथ कैसा व्यवहार होता है, किसी से नहीं छुपा है। बिहार में मुसहर जाति की एक सांसद को टी.टी. ने ट्रेन के वातानुकूलित कोच से परिचय देने के बावजूद इसलिए बाहर निकाल दिया क्योंकि वह वेशभूषा से वातानुकूलित कोच में बैठने लायक नहीं लगती थी।

भारत में महिलाओं की स्थिति क्या है, इस सम्बन्ध में जनगणना २०११ के आंकड़े साबित करते हैं कि आज भी लिंगानुपात ९४० है अर्थात् १००० पुरुषों पर मात्र ९४० महिलाएँ। आखिर हम इस तथ्य की अवहेलना क्यों करते हैं कि नारी के अस्तित्व पर ही सृष्टि का अस्तित्व टिका हुआ है। अकेले पुरुष से दुनिया को नहीं चलाया जा सकता। यही कारण है कि लिंगानुपात में बढ़ते फासले का असर देश के कुछ इलाके में दिख भी रहा है, जहाँ लड़कों को शादी में परेशानी आ रही है। यह उसी पुरुष मानसिकता का हश्र है, जिस पर हम गर्व करते रहे हैं। कन्या जन्म के नाम पर परिवार में मातम अभी भी आम बात है। लड़कियों को गर्भ में ही या पैदा होते ही मार देने की घटनाएँ बढ़ी हैं। छः साल तक की आबादी में इस समय १००० लड़कों के मुकाबले सिर्फ ९१४ लड़कियाँ ही हैं, जो कि २००१ में ९२७ थीं। आज भी हरियाणा और पंजाब जैसे राज्य में यह स्थिति भयावह है। भारत में साल भर में २९०००० बेटियाँ कोख में ही मार दी जाती हैं और इसके लिए बाकायदा लगभग ४५० करोड़ रुपये का भ्रूण हत्या का कारोबार चल रहा है।

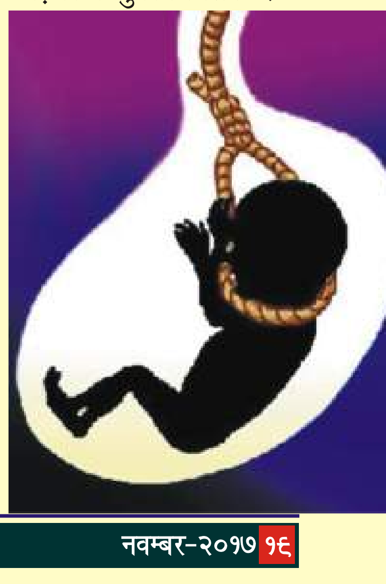

एक नए अध्ययन में यह

बात सामने आई है कि संतान के रूप में एक लड़की होने के बाद यदि गर्भ में दूसरी भी लड़की आ जाती है तो ऐसे भ्रूण की हत्या करवाने की प्रवृत्ति भारत में तेजी से बढ़ रही है। प्रतिष्ठित लैंसेट पत्रिका में प्रकाशित होने वाले इस अध्ययन के निष्कर्षों के अनुसार १९८० से २०१० के बीच इस तरह के गर्भपातों की संख्या ४२ लाख से एक करोड़ २१ लाख के बीच है। सबसे बड़ी विडम्बना तो यह है कि यह कृत्य उन परिवारों में अधिक देखा गया, जिन्हें सुशिक्षित एवं समृद्ध माना जाता है। गरीब व अशिक्षित व्यक्ति तो बच्चों को ईश्वरीय नियति मानकर शान्त रह जाता है पर तथाकथित सुशिक्षित सम्पन्न एवं संभ्रान्त लोग अवैध होने के बावजूद पैसों के दम पर न सिर्फ प्रसव पूर्व लिंग जाँच करा रहे हैं, बल्कि कन्या भ्रूण होने पर उसे गर्भ में ही खत्म कर देने से गुरेज भी नहीं करते हैं। ऐसी प्रवृत्ति आमतौर पर पहली संतान के लड़की होने के मामलों में देखी जाती है। १९८० के दशक में कन्या भ्रूण का चुनिन्दा गर्भपात ०.२० लाख था जो १९९० के दशक में बढ़कर १२ लाख से ४० लाख तथा २००० के दशक में ३१ लाख से ६० लाख तक हो गया। यदि कोई महिला इसका विरोध भी करना चाहे तो उसे तवज्जो नहीं मिलती। वैसे भी धर्म और संस्कृति के सहारे पितृसत्ता स्त्री के एक स्वतंत्रचेता व्यक्तित्व होने की संभावनाओं को नष्ट कर रही है। हिन्दू समाज में उसी स्त्री को आदर्श माना गया जो मनसा-वाचा-कर्मणा पति की अनुगामिनी रही हो। भारत ही नहीं अमेरिका में भी भारतीय मूल की महिलाएँ पुत्र की चाह में खूब कन्या भ्रूण हत्या करवा रही हैं। खास बात यह है कि भारत के विपरीत अमेरिका में लिंग निर्धारण करवाना कानूनन वैध है। यूनिवर्सिटी ऑफ कैलिफोर्निया द्वारा सितम्बर २००४ से दिसम्बर २००९ के बीच लिंग निर्धारण परीक्षण करवाने वाली प्रवासी भारतीय महिलाओं पर हुए शोध में यह बात सामने आई कि ४० प्रतिशत महिलाओं ने यह जानने के बाद कि उनके गर्भ में कन्या पल रही है, गर्भपात करवा दिया।

एक तरफ प्रधानमंत्री कन्या भ्रूण हत्या को राष्ट्रीय शर्म बताते हैं, वहीं कन्या भ्रूण से लेकर अंतिम समय तक पिस रही है। यदि कन्या भ्रूण ने जन्म ले भी लिया तो उनके सम्मान में होता खिलवाड़, दहेज उत्पीड़न, बलात्कार की दर्जनों घटनाएँ अपनी नाक की खातिर माँ-बहन-बेटी की हत्या, और बूढ़ी माँ को दर दर की ठोकरें खाने के लिए छोड़ देना आम बात हो गई है। आज भी किसी अपराध से सबसे आसान मोहरा महिलाएँ ही होती हैं। उनके साथ दुर्व्यवहार, दुष्कर्म व छेड़छाड़ आम बात है। आंकड़े बताते हैं कि पेशेवर अपराधियों से भी ज्यादा गली मुहल्ले, पड़ौस में कुंठित युवक व अधेड, स्त्री सम्बन्धी अपराधों के सूत्रधार हैं। घरेलू हिंसा व कार्यस्थलों पर यौन उत्पीड़न के संदर्भ में इन्टरनेशनल सेंटर फॉर रिसर्च ऑन वूमेन, अमेरिका और इंस्टीट्यूट प्रोमुंडीन, ब्राजील द्वारा संयुक्त रूप से किया गया अध्ययन बताता है कि अपनी जिन्दगी में कभी न कभी २४ फीसदी भारतीय पुरुष यौन हिंसा को अंजाम देते हैं, सिर्फ १७ फीसदी भारतीय पुरुष ऐसे कहे जा सकते हैं कि जो समानता मूलक सम्बन्धों के हिमायती हैं। राष्ट्रीय अपराध रिकार्ड ब्यूरो के आंकड़ों के मुताबिक भारत में प्रति ५१वें मिनिट में एक महिला यौन शोषण की शिकार हर ५४वें मिनट पर एक बलात्कार और हर १२०२वें मिनिट पर एक दहेज हत्या होती है। देश में बलात्कार के मामले २००५ में १८३४९ के मुकाबले बढ़कर २००६ में २२००० हो गए। महिलाओं के उत्पीड़न के मामले भी इस अवधि में ३४००० से बढ़कर

३९००० हो गए जबकि दहेज हत्याओं के मामले २००५ में ६००० के मुकाबले २००६ में ९००० हो गए। यही नहीं विश्व की सर्वाधिक बाल वेश्यावृत्ति भी भारत में है, जहाँ ४ लाख से अधिकतर लड़कियाँ हैं।

कहते हैं कि सामाजिक व आर्थिक विकास में शिक्षा की अहम् भूमिका है, पर यहाँ तो शिक्षित परिवार अभी भी रूढ़ियों से ग्रस्त नजर आता है। आज हर क्षेत्र में महिलाएँ पुरुषों से कदम से कदम मिलाकर चल रही हैं और घर के साथ-साथ बाहरी दुनिया से भी तालमेल बनाए हुए हैं। इसके बावजूद बेटियों को पराया समझना, शादी के लिए बोझ समझना, वंशवृद्धि से लेकर चिता में अग्नि देने जैसी तमाम परम्पराओं का वाहक मात्र बेटों को समझना आम बात है। अभी भी नारी-शिक्षा परिवार की प्राथमिकताओं में शामिल नहीं है, तभी तो देश की छियासी प्रतिशत बेटियाँ प्राथमिक स्तर पर ही स्कूल (पढ़ाई) छोड़ देती हैं और चौसठ फीसदी लड़कियाँ विवाह के लिए निर्धारित अठारह साल की आयु पूरी करने से पहले ही ब्याह दी जाती हैं और इनमें से बाईस फीसदी तो

इस अपरिपक्व उम्र में माँ भी बन जाती हैं। मध्यप्रदेश में ७३ फीसदी लड़कियाँ १८ साल से पहले ब्याह दी जाती हैं, जबकि

आन्ध्रपदेश में यह आंकड़ा ७१ फीसदी राजस्थान में ६८ फीसदी, बिहार में ६७ फीसदी और उत्तरप्रदेश में ६४ फीसदी है। दिन भर सबका ख्याल रखने वाली नारी के स्वास्थ्य का शायद कोई भी ख्याल नहीं रखना चाहता। तभी तो हमारे देश में पन्द्रह से उन्नीस साल की उम्र वाली सैंतालीस फीसदी लड़कियाँ औसत से कम वजन की हैं। आज भी ५६ फीसदी लड़कियाँ एनीमिया यानि खून की कमी की शिकार हैं। प्रति वर्ष छह हजार महिलाएँ बच्चे को जन्म देने के साथ ही मौत के आगोश में चली जाती हैं। देश में हर साल टीबी के कारण एक लाख से ज्यादा महिलाएँ परिवार से अलग कर दी जाती हैं। सामाजिक तौर पर कई इलाकों में आज भी महिलाओं को डायन और चुड़ैल बताकर पत्थरों से मार डाला जाता है, जिन्दा जलाकर सती के नाम पर महिमा मंडित किया जाता है। आम बोलचाल की भाषा में बात-बात पर महिलाओं के अंगों को लानत मलानत लोगों के रोजमर्रा के व्यवहार का हिस्सा है। ऐसे में भला नारी सशक्तीकरण, अशक्तीकरण में क्यों न बदल जाए?

इक्कीसवीं सदी में जबकि नारी के प्रति विभेद की दीवारें टूटनी चाहिए, शिक्षित समाज द्वारा इस प्रकार का विभेद स्वयं उनकी मानसिकता को कटघरे में खड़ा करता है। आर्थिक आंकड़े बता रहे हैं कि भारत ८-९ प्रतिशत विकास दर के साथ समृद्धि और सम्पन्नता की ओर अग्रसर है, पर क्या इस सम्पन्नता में महिलाओं का योगदान शून्य है? हम प्रायः भूल जाते हैं कि जिन बीजों के सहारे सृष्टि का विकास क्रम अनवरत चलता रहता है यदि उस बीज को प्रस्फुटित ही न होने दें तो सारी सृष्टि ही खतरे में पड़ जायेगी। यह समय है मंथन करने का, विचार करने का कि सृष्टि का अस्तित्व सह अस्तित्व पर टिका है न कि किसी एक के अस्तित्व पर।

टाईप-५, निदेशक बंगला
जीपीओ कैम्पस, सिविल लाइन्स
इलाहबाद (उ. प्र.) २११००१

आर्यरत्न डॉ. ओमप्रकाश (म्याँमार) स्मृति पुरस्कार

"सत्यार्थ-भूषण" पुरस्कार ₹ 5100

कौन बनेगा विजेता

- न्यास की मासिक पत्रिका सत्यार्थ सौरभ का सदस्य होना आवश्यक है।
- हल की हुयी पहेली अन्तिम तिथि से पूर्व न्यास कार्यालय में पहुँचे यह सुनिश्चित करें।
- अपना सत्यार्थ सौरभ सदस्यता क्रमांक हल की हुयी पहेली के ऊपर अवश्य अंकित करें।
- लिफाफे के ऊपर 'सत्यार्थप्रकाश पहेली क्रमांक' अवश्य अंकित करें।
- आयु, लिंग, योग्यता की कोई बाधा नहीं। आबाल-वृद्ध, नर-नारी, छोटे-बड़े सभी पात्र हैं।
- विश्व भर के लोगों से सत्यार्थ सौरभ मासिक पत्रिका के अन्तर्गत 'सत्यार्थकाश पहेली' में भाग लेने का अनुरोध है।
- वर्ष भर में एक (१) के स्थान पर चार (४) पुरस्कारों के साथ ही नियमों में सकारात्मक परिवर्तन कर ऐसी व्यवस्था की गई है कि वर्ष में एक बार भाग लेने वाले/अथवा एक बार ही सफलता प्राप्त करने वाले भी पुरस्कार से वंचित न हों।
- पहेली का सही हल प्रेषित करने वाले प्रतिभागियों को ४ भागों में विभक्त किया जावेगा।
  - (अ) सम्पूर्ण वर्ष में समस्त १२ पहेलियों का शुद्ध उत्तर प्रेषित करने वाले।
  - (ब) सम्पूर्ण वर्ष में ८ से ११ पहेलियों का शुद्ध उत्तर प्रेषित करने वाले।
  - (स) सम्पूर्ण वर्ष में ५ से ७ पहेलियों का शुद्ध उत्तर प्रेषित करने वाले।
  - (द) सम्पूर्ण वर्ष में १ से ४ पहेलियों का शुद्ध उत्तर प्रेषित करने वाले।
- वर्षान्त में प्रत्येक समूह में से एक विजेता का चयन (लाट्री द्वारा) किया जाकर पुरस्कृत किया जावेगा।
- पुरस्कार राशि क्रमशः ₹५१००, ₹११००, ₹७०० तथा ₹५०० होगी। अन्य सभी नियम पूर्वानुसार।

₹5100 का पुरस्कार प्राप्त करें
"सत्यार्थ सौरभ" के सदस्य बनें

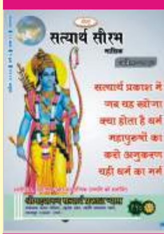

अविलम्ब बहुप्रशंसित पत्रिका 'सत्यार्थ सौरभ' के सदस्य बनें, जो पहले से सदस्य हैं अपना नवीनीकरण करावें और सत्यार्थ सौरभ में छप रही 'सत्यार्थप्रकाश पहेली' में भाग लेने की पात्रता प्राप्त करें और पावें ₹5100 का पुरस्कार।

पूर्ण विवरण इसी पृष्ठ पर देखें।

ज्यादा मत देना परमात्मा

आज के इस भौतिकवाद तथा बढ़ती प्रतियोगिता के युग में जब सभी लोग धन, सम्पदा, शौहरत, संतान तथा प्रसिद्धि को ज्यादा से ज्यादा प्राप्त कर लेना चाहते हैं इस लेख का शीर्षक 'ज्यादा मत देना परमात्मा' हास्यप्रद तथा मूर्खतापूर्ण लगता होगा। मैं जब कभी भी परमात्मा से प्रार्थना करता हूँ तो कहता हूँ कि 'हे परमात्मा जितने की मुझे जरूरत है, वह तो तुझे पता ही है, उतना तो जरूर देना। हाँ अगर ज्यादा मेहरबान हो तो उससे थोड़ा ज्यादा दे देना ताकि अचानक दुःख सुख की जरूरतें पूरी हो सकें। लेकिन बहुत ज्यादा न देना। आपने देखा होगा कि जो गरीब-अभावग्रस्त लोग होते हैं वे अपेक्षाकृत ज्यादा परिश्रमी, ईमानदार, समर्पित भावना वाले, अपने परिवार के साथ उठ बैठकर हँसने-खेलने वाले संतोषी लोग होते हैं। इनका परमात्मा में ज्यादा विश्वास होता है, वे एक दूसरे की दुःख सुख में दिलोजान से मदद करते हैं। उनमें परमात्मा के नाम का भय भी होता है। वे साधारण जीवन तथा उच्च विचारों वाले लोग होते हैं। चाहे उनके पास इतना सामर्थ्य नहीं होता फिर भी वे दूसरों की मदद करना चाहते हैं। अगर किसी मित्र, सहयोगी या फिर अजनबी को खून की जरूरत पड़ जाये तो अमीर आदमी तो अपने पैसे की धौंस जमायेगा, लेकिन अपना या फिर अपने परिवार के सदस्य का खून नहीं देगा। लेकिन एक गरीब या फिर अभावग्रस्त आदमी इन्सानियत के नाते बिना पैसा लिये खून देने के लिये तैयार हो जाएगा। बेशक आजकल वह बात नहीं रही, फिर भी कुल मिलाकर गरीब आदमी अमीर के मुकाबले ज्यादा विश्वासपात्र, ईमानदार, त्याग तथा समर्पित भावना वाला होता है। इन्हीं बातों को लेकर मैं परमात्मा से दुआ करता हूँ कि 'हे परमात्मा' जितनी मुझे जरूरत है, उतना तो जरूर देना लेकिन बहुत ज्यादा मत देना। क्योंकि मेरा मानना है कि जरूरत से ज्यादा होना आदमी का दिमाग खराब कर देता है वह अहंकारी तथा अपनों से दूर हो जाता है। एक अनुमान के अनुसार हमारे देश के लगभग २० प्रतिशत लोगों के पास कुल धन/सम्पति का लगभग ८० प्रतिशत है। कुछ अपवादों को अगर छोड़ दिया जाये तो आय कम होने के बावजूद भी यह २० प्रतिशत लोग अपेक्षाकृत ज्यादा संतोषी, ईश्वर की सत्ता में विश्वास रखने वाले एक दूसरे के प्रति ईमानदार तथा सहायता करने वाले तथा जुबान के पक्के मिलेंगे। इन लोगों में से ही सेना/पुलिस में भर्ती होकर देश

की सेवा, सीमाओं की रक्षा करते हैं तथा त्याग करते हैं। इनकी इच्छायें बहुत सीमित होती हैं। आकाश की ऊँचाईयाँ नापने के सपने कम होते हैं। लेकिन जैसे-जैसे आदमी के पास हेराफेरी, बेईमानी, रिश्वत, कालाबाजारी, मिलावट आदि के कारण पैसा ज्यादा आने लगाता है उसके विचार बदलने लग जाते हैं, अहंकार, क्रोध, लोभ, स्वार्थ तथा पैसे के प्रदर्शन की भावना बढ़ जाती है। पैसा, पैसा और हाय! पैसा। हर समय 'पैसा' ही भाव रहता है। पैसा आदमी को पागल बना देता है, वह इन्सानियत भूल उन लोगों के साथ सम्बन्ध बनाने तथा काम करने की सोचता है जहाँ कि उसके पैसे में वृद्धि हो। माँ-बाप की सेवा करना, गरीब रिश्तेदार या मित्र के साथ पहले की तरह शान्ति व चैन से मिल बैठकर गप्पें लगाना उसके लिये अपने स्टैंडर्ड से नीचे की बात हो जाती है। आमतौर पर धनवान लोग बहुत कम इकट्ठे बैठकर खाना खाते होंगे, बहुत कम माँ-बाप अपने बच्चों से प्यार की बातें करते होंगे, स्कूल/कॉलेज की पढ़ाई या उसके आचरण के बारे में चिन्ता करते होंगे। ऐसे लोगों के बच्चे या तो महंगे होस्टलों में रहते हैं या घर की आया, नौकरों के सहारे चलते उन्हें अच्छे संस्कार/माँ-बाप का ध्यान नहीं मिलता। वे किसके साथ क्या करते हैं, स्कूल जाते हैं या नहीं, काम करते हैं या नहीं आदि का माँ-बाप को पता नहीं होता। लाड़-प्यार के नाम पर माँ-बाप उन्हें महंगे कपड़े, मोबाईल,

कम्प्यूटर या फिर मोटर बाईक ले देते हैं। माँ-बाप के प्यार, मार्ग दर्शन तथा संस्कारों से वंचित ये लड़के अहंकारी, कृतघ्न, बड़े-छोटे की परवाह न करने वाले, गरीबों से नफरत करने वाले या फिर उनका उपहास करने वाले मादक पदार्थों का सेवन करने वाले तथा माँ-बाप के ऊँचे रुतबे का नाजायज फायदा उठाने वाले बन जाते हैं।

जब आदमी के पास पैसा बहुत ज्यादा हो जाता है, धन सम्पति, ऊँची पदवी, शोहरत, अधिकार, नाम धाम ज्यादा हो जाता है तब आदमी देश की सियासत में भी दिलचस्पी लेने लगता है। हम जानते हैं कि सियासत एक गंदा खेल है। उल्टे पुल्टे दांव पेच आदमी को इन्सानियत से गिरा देता है। स्वार्थी/बेवकूफ बनाने वाले उसके पाँव छूते हैं, गुणगान करते हैं, स्वागत पार्टियाँ देते हैं, इससे वह अहंकारी बन जाता है। शराब इसकी जिन्दगी का अहम भाग बन जाता है। वह झूठ बोलता है अन्याय का साथ देता है, कई बार सच्चे आदमी को सजा देनी पड़ती है, गलत व्यक्ति का समर्थन करना पड़ता है। बेशक इस क्षेत्र में भी अपवाद तो हैं ही। लेकिन कुल मिलाकर लगातार सत्तासीन, व्यापार, उद्योग अथवा वित्तीय क्षेत्र में हावी होने वाले आदमी के पास बेशक पैसा ज्यादा आ जाये लेकिन उसे मन की शान्ति, परिवार का मान, सम्मान तथा प्यार, सच्ची खुशी, बचपन के गरीब लेकिन ईमानदार तथा त्याग करने वाले मित्रों/सहपाठियों के साथ घूमने/खेलने की सच्ची खुशी नहीं मिलती। ऐसे आदमी के पास सब कुछ होता है फिर भी वह गरीब होता है, अकेला होता है, भय उस पर सदा हावी रहता है, उसका साम्राज्य उससे छिन जाने का भय उसे सताता रहता है। अतः हार्ट प्रॉबल्म, ब्लड प्रैशर, डायबिटीज, टैन्शन जैसी बीमारियाँ उसे सताती रहती हैं, उसकी आमदनी का कुछ भाग डॉक्टरों से इलाज तथा दवा दारू पर खर्च हो जाता है। सरकारों के बदलने से उसे अपनी पोजीशन के कमजोर होने का डर लगा रहता है। सत्ता में ऊँचे ओहदे पर बैठे लोग आज बेशक धन, सम्पत्ति के अंबार लगा लें, सरकार बदलते ही नई सरकार इनकम टैक्स, सी.बी.आई या किसी पुराने मामले में एफ.आई.आर. को खोदकर उसकी रातों की नींद तथा दिन के चैन को हराम करने का काम करने लग जाती है। उसका नाम मिट्टी में मिल जाता है उसके विपरीत समय में कोई उसका साथ नहीं देता। उसने अकेले ने खाया था, अब अकेले ही सजा भुगतेगा। उसने इतने पाप कर रखे होते हैं, इतने दोस्त दुश्मन बना रखे होते हैं कि उसके पास औपचारिकता के तौर पर जाते हुये भी लोग डरते हैं।

इसलिये परमात्मा से दुआ करता हूँ कि देना तो जरूर लेकिन ज्यादा ना देना। अगर देना है तो अच्छी सेहत, नेकनामी, अच्छी सोच, पारिवारिक सुख, शान्ति, अच्छे ईमानदार, हर मौके पर साथ देना वाला मित्र, सहयोगी तथा रिश्तेदार देना। देना है तो सद्बुद्धि, संतोष, संयम देना, परमात्मा से डरने वाली बुद्धि देना। ज्यादा धन, ज्यादा संतान, ज्यादा ताकत, बहुत ऊँची हैसियत- ये तो मुसीबत पैदा करने वाली हैं।

-प्रो. शामलाल कौशल
मकान नं. ९७५-बी/२०
राजीव निवास, शक्ति नगर
ग्रीन रोड, रोहतक (हरियाणा)

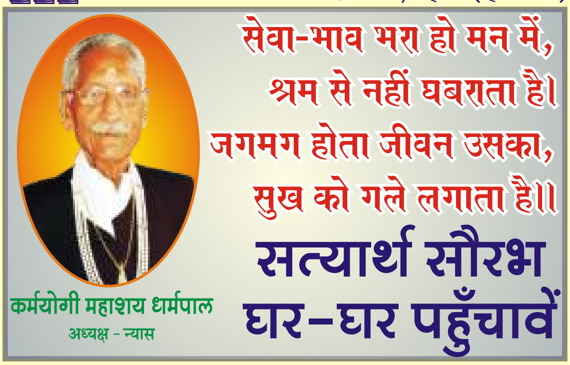

संरक्षक मण्डल - सत्यार्थ सौरभ (₹११,०००)

स्वामी (डॉ.) ओमानन्द सरस्वती, श्रीमान् आनन्द कुमार आर्य, श्री भवानी दास आर्य, श्री सुरेश चन्द्र अग्रवाल, श्री रतिराम शर्मा, श्री दीनदयाल गुप्त, श्री बी.एल. अग्रवाल, श्री कै. देवरत्न आर्य, श्री चन्दूलाल अग्रवाल, श्री मिठाईलाल सिंह, श्री नारायण लाल मित्तल, श्री सुधाकर पीयूष, श्रीमती शारदा गुप्ता, आर्य परिवार संस्था कोटा, श्रीमती आभाआर्या, गुप्त दान दिल्ली, आर्यसमाज गाँधीधाम, गुप्तदान उदयपुर, श्री राजकुमार गुप्ता एवं सरला गुप्ता, श्री मोती लाल आर्य, श्री लक्ष्मण सराफ, श्रीमती पुष्पा गुप्ता, श्री जयदेव आर्य, श्री श्रवण कुमार गुप्ता, श्रीमती सरोज वर्मा, श्री विवेक बंसल, श्री दीपचंद आर्य, श्री एम.पी. सिंह, प्रो. आर.के.एरन, श्री खुशहालचन्द आर्य, श्री विजय तायलिया, श्री वीरेन्द्र मित्तल, स्वामी (डॉ.) आर्येशानन्द सरस्वती, स्वामी प्रवासानन्द सरस्वती, स्वामी प्रणवानन्द सरस्वती, श्री राव हरिश्चन्द्र आर्य, श्री भारतभूषण गुप्ता, श्री कृष्ण चौपड़ा, श्री रामप्रकाश छाबड़ा, श्री विकास गुप्ता, श्री एम. विजेन्द्र कुमार टाक, श्री नरेश कुमार राणा, डॉ.मोतीलाल शर्मा, डी.ए.वी. एकेडमी, टाण्डा, श्री प्रधान जी, मध्यभारतीय आ. प्र. सभा, श्री रघुनाथ मित्तल, मिश्रीलाल आर्य कन्या इण्टर कॉलेज, टाण्डा, श्री प्रह्लादकृष्ण एवं श्रीमती प्रभा भार्गव श्री लोकेश चन्द्र टांक, श्रीमती गायत्री पंवार, डॉ. वेद प्रकाश गुप्ता, श्री वीरमुखी, डॉ. अमृतलाल तापड़िया, आर्य समाज हिरणमगरी, उदयपुर, श्री सुरेशपाल, यू.एस.ए., श्री राजेन्द्र कुमार सक्सेना, कोटा, श्रीमती सुमन सूद, कन्डा घाट (सोलन), माता शीला सेठी, न्यूजर्सी, डॉ. एस. के. माहेश्वरी, उदयपुर, श्री राजेश तिवारी (शिक्षक), ग्वालियर, श्रीमती सविता सेठी, चण्डीगढ़, डॉ. पूर्णसिंह डबास, नई दिल्ली, श्री बृज वधवा, अम्बाला शहर, श्री हजारी लाल आर्य, उदयपुर, डॉ. सत्यप्रकाश, हरदोई, राजेन्द्रपाल वर्मा, वडोदरा, प्रिन्सीपल डी. ए. वी. एच. जेड. एल. सी. सै. स्कूल, दरीबा (राजसमन्द), आचार्य आनन्द पुरुषार्थी, होशंगाबाद, श्री ओ३म् प्रकाश अग्रवाल, नोएडा, श्री भरत ओ३म् प्रकाश अग्रवाल, अहमदाबाद, श्री सुरेन्द्र कर्मचन्दानी, पुणे, डॉ. आनन्द कुमार शर्मा, नई दिल्ली, श्री रमेश चन्द्र गुप्ता, यू.एस.ए., श्री शुद्धबोध शर्मा; श्रीगंगानगर

देशी गाय के दूध से तैयार दही वाले मिश्रण से होते हैं अधिक फायदे

रासायनिक उर्वरक व कीटनाशक से होने वाले नुकसान के प्रति किसान सजग हो रहे हैं। जैविक तकनीक की बदौलत उत्तर बिहार के करीब ६० हजार किसानों ने यूरिया से तौबा कर ली है। इसके बदले दही का प्रयोग कर किसानों ने अनाज, फल, सब्जी के उत्पादन में २५ से ३० प्रतिशत बढ़ोतरी भी की है। २५ किलो यूरिया का मुकाबला दो किलो दही ही कर रहा है। यूरिया की तुलना में दही-मिश्रण का छिड़काव ज्यादा फायदेमन्द साबित हो रहा है। किसानों की मानें तो यूरिया की फसल में करीब २५ दिन तक दही के प्रयोग से फसलों में ४० दिनों तक हरियाली रहती है।

सकरा के मछही की किरण कुमारी, चाँदनी देवी, नूतन देवी, पवन देवी, धर्मशीला देवी बताती हैं कि इस प्रयोग से सब्जी,

फल व अनाज की मात्रा व गुणवत्ता में सुधार हुआ है। केशोपुर के अरविन्द प्रसाद, ओम प्रकाश, राजा राम सिंह, रमेश सिंह, रघुनाथ राम, वीरचन्द्र पासवान आदि बताते हैं कि आम, लीची, गेहूँ, धान व गन्ना में प्रयोग सफल हुआ है। फसल को पर्याप्त मात्रा में लम्बे समय तक नाइट्रोजन व फॉस्फोरस की आपूर्ति होती रहती है। कोरमा के किसान संतोष कुमार बताते हैं कि वे करीब दो वर्षों से इसका प्रयोग कर रहे हैं। काफी फायदेमन्द साबित हुआ है।

लीची व आम का होता है अधिक उत्पादन

इस मिश्रण का प्रयोग आम व लीची में मंजर आने से करीब १५-२० दिन पूर्व करें। एक लीटर पानी में ३० मिलीलीटर दही का मिश्रण डाल कर घोल तैयार कर लें। इससे पौधों की पत्तियों को भिगो दें। १५ दिन बाद दोबारा यही प्रयोग करना है। इससे लीची व आम के पेड़ों को फॉस्फोरस व नाइट्रोजन की सही मात्रा मिलती है। मंजर को तेजी से बाहर निकलने में मदद मिलती है। सभी फल समान आकार के होते हैं। फलों का झड़ना भी इस प्रयोग से कम हो जाता है।

ऐसे तैयार होता है दही का मिश्रण

देशी गाय के दो लीटर दूध का मिट्टी के बरतन में दही तैयार करें। तैयार दही में पीतल या तांबे का चम्मच, कलछी या कटोरा डुबो कर रख दें। इसे ढक कर आठ से १० दिनों तक छोड़ देना है। इसमें हरे रंग की तूतिया निकलेगी। फिर बरतन को बाहर निकाल अच्छी तरह धो लें। बरतन धोने के दौरान निकले पानी को दही में मिला मिश्रण तैयार कर लें। दो किलो दही में तीन लीटर पानी मिलाकर पाँच लीटर मिश्रण बनेगा। इस दौरान इसमें से मक्खन के रूप में कीट नियंत्रक पदार्थ निकलेगा। इसे बाहर निकाल कर इसमें वर्मी कम्पोस्ट मिला कर पेड़-पौधों की जड़ों में डाल दें। ध्यान रहे इसके सम्पर्क में कोई बच्चा न आये। इसके

प्रयोग से पेड़ पौधों में तना भेधक (गराड़) और दीमक समाप्त हो जायेंगे। पौधा निरोगी बनेगा। जरूरत के अनुसार से दही के पाँच किलो मिश्रण में पानी मिलाकर एक एकड़ फसल में छिड़काव होगा। इसके प्रयोग से फसलों में हरियाली के साथ-साथ लाही नियंत्रण होता है। फसलों को भरपूर मात्रा में नाइट्रोजन व फॉस्फोरस मिलता है। इससे पौधे अंतिम समय तक स्वस्थ रहते हैं।

आइसीएआर में भी प्रयोग सफल

इसका प्रयोग मुजफ्फरपुर के सकरा, मुरौल, कुढ़नी, मीनापुर, पारु, सरैया व बंदरा में काफी तेजी से बढ़ रहा है। वैशाली, समस्तीपुर, बेगूसराय व दरभंगा के दक्षिणी इलाके में काफी संख्या में किसानों ने इसे अपनाया है। यहाँ के किसानों द्वारा दिल्ली के बुरारी रोड, नत्थूपुरम्, इब्राहीमपुर, उत्तमनगर, नागलोई, गुड़गाँव, नजफगढ़, रोहिनी समेत कृषि फार्म में इसके प्रयोग से उत्पादन में सुधार हुआ है। भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद, नई दिल्ली में भी इसके सफल प्रयोग से जैविक अनाज, फल व सब्जी का उत्पादन हुआ है। यहाँ के दिनेश कुमार को दिल्ली स्थित आइसीएआर में दो केन्द्रीय मंत्रियों ने इसके लिए सम्मानित किया।

बोले किसान

सकरा के 'इनोवेटिव किसान सम्मान' विजेता दिनेश कुमार ने बताया, मक्का, गन्ना, केला, सब्जी, आम, लीची सहित सभी फसलों में यह प्रयोग सफल रहा है। आत्म हितकारिणी समूह के ६० हजार किसान यह प्रयोग कर रहे हैं। इसके बाद मुजफ्फरपुर वैशाली के साथ-साथ दिल्ली की धरती पर भी इसे उतारा है।

मुजफ्फरपुर के 'किसान भूषण सम्मान' प्राप्त सतीश कुमार द्विवेदी कहते हैं जिन खेतों में कार्बनिक तत्व मौजूद होते हैं, उनमें इस प्रयोग से फसलों का उत्पाद ३० फीसदी अधिक होता है। इस मिश्रण में मेथी का पेस्ट या नीम का तेल मिलाकर छिड़काव करने से फसलों पर फंगस नहीं लगता है। इसके प्रयोग से नाइट्रोजन की आपूर्ति, शत्रु कीट से फसलों की सुरक्षा व मित्र कीटों की रक्षा एक साथ होती है।

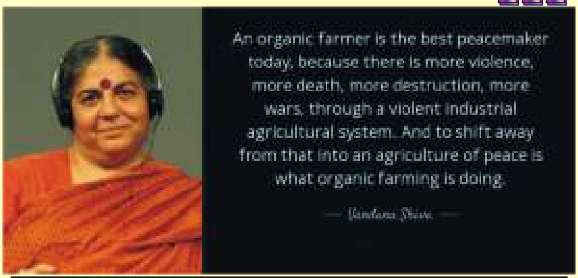

अनेक विशेषताओं से युक्त १८८४ के मूल सत्यार्थप्रकाश के सर्वाधिक नजदीक, तत्कालीन शैली का संरक्षण, मुद्रण अशुद्धियों से रहित
सत्यार्थप्रकाश
अवश्य खरीदें।
अब मात्र कीमत ₹ 45 में
४००० रु. सैंकड़ा
शीघ्र मंगवाएँ
घाटे की पूर्ति पूर्ववत् दानदाताओं के सहयोग से ही संभव होगी। आशा ही नहीं पूर्ण विश्वास है कि सत्यार्थप्रकाश प्रेमी इस कार्य में आगे आवेंगे।
श्रीमद् दयानन्द सत्यार्थ प्रकाश न्यास, नवलखा महल, गुलाबबाग, उदयपुर - ३१३००१

न्यास द्वारा प्रकाशित सत्यार्थ प्रकाश
अब ४००० रु. सैकड़ा
सत्यार्थ प्रकाश प्रचार सहयोग अब
एक हजार प्रतियों के लिए १५००० रु.

सत्यार्थप्रकाश प्रचार सहयोग निधि

- **सत्यार्थ प्रकाश से उत्कृष्ट कोई ग्रन्थ नहीं जिसके प्रकाशन में आपकी पुण्य दान राशि का प्रयोग हो।** सत्यार्थ प्रकाश प्रचार हेतु,कम राशि में अधिक संख्या में यह महान् ग्रन्थ जन-जन के हाथों में पहुँच सके, एतदर्थ निम्न योजना निर्मित की गई है:-
- सत्यार्थप्रकाश के प्रचार हेतु कृपया निम्नानुसार सहयोग कर **लागत मूल्य से आधी कीमत में** सत्यार्थप्रकाश का दिया जाना सुनिश्चित करें। आपके द्वारा सहयोगार्थ प्रदान की गई राशि के समक्ष अंकित प्रतियों पर आपका अथवा आपके किसी प्रियजन का चित्र ग्रन्थ पर दिया जावेगा।

राशि	प्रतियों की संख्या	राशि	प्रतियों की संख्या
१५००००	दस हजार	११२५००	७५००
७५०००	५०००	३७५००	२५००
१५०००	१०००	इससे स्वल्प राशि देने वाले दानवीरों के नाम ग्रन्थ में अंकित किये जायेंगे।	

आपका दान आयकर अधिनियम की धारा ८० जी के अंतर्गत करमुक्त होगा। राशि न्यास के नाम ड्राफ्ट या चैक द्वारा भेजें अथवा यूनियन बैंक ऑफ इंडिया, उदयपुर खाता क्रमांक ३१०१०२०१००४१५१८ में जमा कर सूचित करें।

निवेदक

भवानीदास आर्य (मंत्री-न्यास) | भंवरलाल गर्ग (कार्यालय मंत्री) | डॉ.अमृत लाल तापड़िया (उपमंत्री-न्यास)

समाचार

अम्बाला में वेदप्रवचन

आर्यसमाज माडल टॉउन, अम्बाला (हरियाणा) के तत्त्वावधान में कार्तिक कृष्णा सप्तमी से कार्तिक कृष्णा एकादशी विक्रमी सम्वत् २०७४ तदनुसार दिनांक १२ अक्तूबर से १५ अक्तूबर २०१७ तक चतुर्दिवसीय वेदप्रवचन समारोह का आयोजन किया गया। इस अवसर पर 'आचार्य विष्णुमित्र वेदार्थी' के द्वारा वेद प्रवचन व आर्य भजनोपदेशक पण्डित कुलदीप आर्य के द्वारा भजनोपदेश सम्पन्न हुए। समारोह में अम्बाला परिक्षेत्र एवं आस-पास के श्रद्धालुओं ने भाग लिया। समारोह अत्यन्त गरिमा तथा प्रेरणा के साथ सम्पन्न हुआ।

- अर्जुनलाल चिटकारा, मन्त्री-आर्यसमाज

महर्षि दयानन्द सरस्वती का १३४ वाँ बलिदान दिवस

महर्षि दयानन्द सरस्वती का १३४ वाँ बलिदान दिवस दिनांक १९ अक्टूबर २०१७ प्रातः ८.०० बजे महर्षि दयानन्द निर्वाण स्थली (भिनाय कोठी) में महर्षि दयानन्द निर्वाण न्यास एवं अजमेर जिले के समस्त आर्य समाजों के संयुक्त तत्त्वावधान में मनाया गया। ज्ञात हो कि इसी स्थान पर युग पुरुष महर्षि दयानन्द सरस्वती ने १८८३ दीपावली के दिन 'प्रभु तेरी इच्छा पूर्ण हो' कहकर अपने प्राण त्यागे थे।

- प्रधान, महर्षि दयानन्द सरस्वती न्यास, अजमेर

आर्य समाज, संदेश विहार, पीतमपुर का २५वाँ वार्षिक उत्सव

आर्य समाज संदेश विहार पीतमपुरा दिल्ली का २५वाँ वार्षिक उत्सव २ नवम्बर २०१७ से ५ नवम्बर २०१७ तक आचार्य गौतम जी करनाल के पावन सान्निध्य में मनाया गया। जिसमें बृहद यज्ञ, प्रवचन, मधुर भजन, आर्योद्देश्य रत्नमाला में से प्रश्नोत्तरी, बच्चों के कार्यक्रमों के साथ आर्यजनों का सम्मान किया गया।

- देवमित्र आर्य, मंत्री

आर्य समाज के गौरव

आर्य समाज की जिन लोगों ने तन-मन-धन से सेवा की है और महर्षि दयानन्द के सिद्धान्तों के अनुसार जीवन पर चलते हुए आर्य समाज के गौरव को बढ़ाया है ऐसे १०० विद्वानों का जीवन चरित्र, कार्य, उपदेश आदि को लिए हुए 'आर्य समाज के गौरव' नामक ऐतिहासिक ग्रन्थ आर्ट पेपर पर छपेगा। कृपया आप अपना एक रंगीन पासपोर्ट साइज फोटो, जन्म से आज तक का पूर्ण विवरण भेजने की कृपा करें। जिसमें संन्यासी, महोपदेशक, भजनोपदेशक, विदुषी महिलाएँ, राजनेता शिक्षाविद्, लेखक, समाजसेवी, दानी एवं उद्योगपति आदि होंगे जिनकी आयु ४० वर्ष से अधिक हो। समिति के निर्णयानुसार प्रकाशन होगा।

- ठाकुर विक्रम सिंह, अध्यक्ष, राष्ट्र निर्माण पार्टी, दिल्ली

नवसस्येष्टि यज्ञ धूमधाम से मनाया

आर्य समाज सनवाड़ ने नवसस्येष्टि यज्ञ (दीपावली के दिन) हाईवे बाईपास स्थित डॉक्टर एम. पी. सिंह के भवन पर बहुत ही धूमधाम से मनाया। यज्ञ के पुरोहित उपप्रधान दिलीप कुमार आर्य थे। यजमान दिग्विजय सिंह राठौड़, नारायण लाल आर्य, भानु कुमार आर्य, शम्भू पुरी गोस्वामी व रतन लाल बंजारा थे। हवन के पश्चात् अपने उद्बोधन में आर्य समाज के प्रधान डॉक्टर एम. पी. सिंह ने कहा कि हमारे प्राचीन युग से नवसस्येष्टि यज्ञ का कार्यक्रम आज के दिन सम्पन्न होता आ रहा है। यह कार्यक्रम स्वयं राम एवं उनके पूर्वजों द्वारा भी सम्पन्न किया जाता था और आज के दिन नई फसल की खुशी में यह पर्व सभी लोग सामूहिक रुप से मनाते आ रहे हैं। कार्यक्रम में उपप्रधान माधवलाल आर्य, उप व्यायाम शिक्षक बाबूलाल आर्य, राजू, संजीव, हेमलता आदि अनेकों लोग उपस्थित थे।

दानवीर सत्यनारायण जी आर्य वानप्रस्थ का निधन

महान् शोक का विषय है कि आज न्यास के न्यासी श्री सत्यनारायण जी वानप्रस्थ हमारे मध्य नहीं रहे। उन्होंने आर्य समाज के छठे व नवें नियम को विशेष रूप से अपने जीवन में जिया और तदनुरूप ही परोपकार में पूर्ण क्षमता के साथ अपना सम्पूर्ण जीवन लगा दिया। उनकी विशेष बात यह थी कि वे अन्यों को भी परोपकार के कामों में रुचि लेने हेतु सहजता के साथ प्रेरित कर देते थे। उनके द्वारा स्वयं दिए व अन्यों से दिलवाए दान से आज अनेक संस्थाएँ, अनेक प्रकल्प पुष्पित तथा पल्लवित हैं। उन्होंने ६ जनवरी १९२७ को सुजानगढ़ (चुरु) के श्री हरिबगस जी तथा माता बसंती देवी लाहोटी के यहाँ जन्म लिया।

स्वाध्यायशील वानप्रस्थ सत्यनारायण जी ने क्रान्तिकारी अखबार 'सुजानगढ़ समाचार' का सम्पादन भी किया। गुरुकुल हरिपुर के कुलाधिपति पद को सम्भालने से पूर्व आप अनेक आर्य संस्थाओं, जिनमें यह न्यास भी सम्मिलित है, से संरक्षक, अध्यक्ष, सदस्य, ट्रस्टी के रूप में जुड़कर उन्हें गुरुतर बनाने में सहायता देते रहे।

आपकी दया-भावना के केंद्र में मनुष्य ही नहीं मानवेतर प्राणी भी रहे। उन्होंने जहाँ गरीबी की रेखा के नीचे जीवन-यापन करने वाले परिवारों के लिए ३७७ फ्लैट बनवाये, १३ विद्यालय भवन, ५ अस्पताल भवन बनवाये आर्य समाज भवनों का निर्माण कराया वहीं १३ सांडघर, १ गौशाला, ३३ पक्षीघर भी बनवाये। आपने परोपकार के कार्यों के लिए और विशेषकर यज्ञ में उचित सामग्री के प्रयोग हेतु अनेक संस्थाओं में स्थिर-निधियाँ कायम कीं जिनमें यह न्यास भी सम्मिलित है।

आपने बबासीर, नेत्र, पोलियो आदि के निवारणार्थ अनेक चिकित्सा शिविर लगवाये।

परोपकारार्थ ही सम्पूर्ण जीवन लगाने वाले और मृत्यु के उपरान्त भी मृत शरीर को भी इसी निमित्त समर्पित करने वाले महामना हमारे मध्य में नहीं हैं पर उनके यश की सुरभि सदा-सदा हमें प्रेरित करती रहेंगी इसमें कोई संदेह नहीं है।

हम न्यास के सभी सदस्य अत्यन्त दुःख के साथ उनके विछोह को लेते हैं पर ईश्वर की अटल व्यवस्था के समक्ष नतमस्तक होते हुए प्रभु से यही प्रार्थना करते हैं कि दिवंगत आत्मा को अपनी आनन्दमयी गोद में स्थान प्रदान करें और परिवारीजनों व हम आर्यों को वह शक्ति-भक्ति प्रदान करें कि हम उनके पथ के अनुगामी बन सकें।

- अशोक आर्य, कार्यकारी अध्यक्ष-न्यास, उदयपुर

मूक बधिर आर्यवीरों ने पद जीते

आर्य समाज मंदिर, महर्षि पाणिनि नगर, पूंजला-जोधपुर के मूक बधिर आर्यवीरों ने जयपुर जिला बधिर खेल एसोसियेशन द्वारा ७ व ८ अक्टूबर २०१७ को आयोजित द्वितीय ऐथिलीट्स प्रतियोगिता में १०० मीटर दौड़ में लिखमाराम ने गोल्ड व बाबूलाल ने रजत पदक तथा २०० मीटर दौड़ में हनुमानाराम ने रजत पदक जीतकर अपनी उत्कृष्ट प्रतिभा का लोहा मनाया।

– कैलाश चन्द्र आर्य, प्रधान

शोक संवेदना

आर्य समाज हनुमान रोड़ के एक स्तम्भ श्री नरेन्द्र सिंह हुड्डा जी के पुत्र कार्तिके हुड्डा (मन्नू) का हृदय गति रुक जाने के कारण २६ वर्ष की अल्प आयु मे आकस्मिक निधन हो गया है।

टंकारा 'श्री' श्रीमती अरुणा सतीजा के श्रद्धेय पति देव श्री मनोहर लाल जी सतीजा का २६ अगस्त २०१७ को प्रातः ५.४५ बजे स्वर्गवास हो गया।

दिवंगत हुए श्री कृष्णलाल जी आर्य

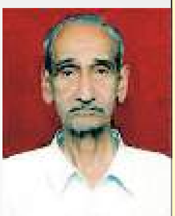

आर्य समाज बीकानेर के वरिष्ठ सदस्य श्री कृष्ण लाल आर्य का ८१ वर्ष की अवस्था में एक अल्प बीमारी के बाद दिनांक ४ जून २०१७ को निधन हो गया। इससे आर्यसमाज के सभी सदस्य आहत हैं। आप निष्ठावान आर्य थे। समाज के अनेक पदों को आपने सुशोभित किया। आपका निधन आर्य समाज बीकानेर की अपूरणीय क्षति है। परमात्मा दिवंगत आत्मा को शान्ति एवं सद्गति प्रदान करें।

– महेश सोनी, प्रधान एवं समस्त सदस्यगण

स्व. श्रीमती रुकमणि, देवी जी स्मृति यज्ञ परिवार द्वारा यज्ञशाला निर्माण की घोषणा

कई वर्षों तक मंत्री, प्रधान आदि पदों को सुशोभित करने वाली, नगर आर्य समाज, बीकानेर की वरिष्ठ तथा संरक्षक मण्डल की सदस्य श्रीमती रुकमणि देवी जी (धर्म पत्नी स्व. श्री बलवीर सिंह जी आर्य) का स्वर्गवास २० जून को हो गया जिनकी अन्त्येष्टि वैदिक रीति के अनुसार आर्य जनों की उपस्थित में हुई।

आपके समर्पण भाव के कारण आपको संभाग स्तर पर सम्मानित किया गया था। उनके बड़े पुत्र श्री रमेश जी ने घोषणा की कि नगर आर्य समाज के नव निर्मित होने वाले भवन में यज्ञशाला का सम्पूर्ण व्यय आपका परिवार वहन करेगा। इस अवसर पर श्री भूराम जी यादव, किसनाराम जी, भगवती प्रसाद, राजगोपाल, खेताराम आदि गणमान्य व्यक्ति भारी संख्या में उपस्थित थे। सत्यार्थ सौरभ व न्यास परिवार की ओर से विनम्र श्रद्धांजलि।

– महेश सोनी, प्रधान एवं समस्त सदस्यगण

सत्यार्थ सौरभ व न्यास परिवार परम पिता परमात्मा से प्रार्थना करता है कि उपरोक्त सभी दिवंगत आत्माओं को अपनी आनन्दमयी गोद में स्थान प्रदान करें।

– भवानीदास आर्य, मंत्री-न्यास

प्रतिस्वर

मान्यवर श्री अशोक जी आर्य
सादर सप्रेम नमस्ते।

सत्यार्थ सौरभ महत्वपूर्ण सामयिक और वैदिक सिद्धान्तानुकूल सामग्री के कारण अपना विशिष्ट महत्व रखता है। अच्छा हो यदि श्रेष्ठ साहित्यिक महत्व की कविताएँ भी पत्रिका में देते रहें। जैसा कि सितम्बर २०१७ के अंक में हिन्दी दिवस पर कविवर सोम ठाकुर का 'राजभाषा वन्दन' प्रकाशित हुआ था। वैदिक साहित्य के नव प्रकाशन की संक्षिप्त विवरणिका भी हम जैसे स्वाध्यायशील आर्यजनों की ज्ञान पिपासा शान्त करने के लिए पत्रिका में दे सकें तो बड़ा उपकार होगा। वेद सुधा के अन्तर्गत महात्मा गोपाल स्वामी जी सरस्वती जी की लेखमाला सत्यार्थ सौरभ में पढ़कर बहुत प्रभावित हूँ।

– राजनारायण चौधरी, शाजापुर, मध्यप्रदेश

आदरणीय सम्पादक जी, सादर नमस्ते। सत्यार्थ सौरभ जो कि आज आर्य जगत् की उच्च कोटि की पत्रिका है। आपकी लगन और पुरुषार्थ के कारण ही यह आर्य समाज की पत्रिकाओं में अपना उच्च स्थान बना पाने में पूर्णरूपेण समर्थ हो पायी है। कामना है यह इसी प्रकार से ऋषि दयानन्द की ध्वज पताका को फहराती रहे।

– विश्वेन्द्र आर्य, आगरा

आर्य समाज हिरणमगरी, उदयपुर ने दीपावली पर्व मनाया

आर्य समाज हिरणमगरी, उदयपुर द्वारा बड़ी धूम-धाम से दीपावली पर्व मनाया गया। जिसमें श्री इन्द्रप्रकाश यादव के पौरोहित्य में विशेष यज्ञ सम्पन्न हुआ। नवलखा महल के कार्यकारी अध्यक्ष श्री अशोक आर्य द्वारा दीपावली पर्व पर विशेष उद्बोधन देते हुए महर्षि दयानन्द के व्यक्तित्व के विभिन्न पहलुओं पर प्रकाश डाला गया।

सत्यार्थ प्रकाश पहेली - ०९/१७ के विजेता

सत्यार्थ प्रकाश पहेली के संदर्भ में हमें उत्साहजनक प्रतिक्रियाएँ प्राप्त हो रही हैं। **सत्यार्थ प्रकाश पहेली- ०९/१७** के चयनित विजेताओं के नाम इस प्रकार हैं- श्रीमती सरोज वर्मा; जयपुर (राज.), श्रीमती किरण आर्या; कोटा (राज.), श्री यज्ञसेन चौहान; बिजयनगर (राज.), श्री इन्द्रजीत देव; यमुनानगर (हरियाणा), श्री रमेश आर्य/रमेश गारमेन्ट; दीनानगर (पंजाब), श्री वासुभाई मगनलाल ठक्कर (कारिया); बनासकांठा (गुजरात), मीना वासुदेव भाई ठककर; साबरकांठा (गुजरात), धर्मिष्ठा वासुदेव भाई ठककर; साबरकांठा (गुजरात), श्री जीवनलाल आर्य; दिल्ली, श्री पुरुषोत्तम लाल मेघवाल; उदयपुर (राज.), श्री रमेश चन्द्र गुप्ता; दिल्ली, श्री सत्यनारायण तोलम्बिया; भीलवाड़ा (राज.), श्री हीरालाल बलाई; उदयपुर (राज.), श्री धर्मवीर आसेरी; बीकानेर (राज.), श्री महेश चन्द्र सोनी; बीकानेर (राज.), श्री गोरवर्धन लाल झँवर; सीहोर (म.प्र.), श्री श्याम मोहन गुप्ता; इन्दौर (म.प्र.), श्री राजनारायण चौधरी; शाजापुर (म.प्र.)। सत्यार्थ सौरभ के उपर्युक्त सभी सुधी पाठकों को हार्दिक बधाई।

ध्यातव्य- पहेली के नियम पृष्ठ २१ पर अवश्य पढ़ें।

मधुमेह रोगियों के लिए ग्लाइसेमिक सूचकांक का महत्त्व

ग्लाइसेमिक सूचकांक या जीआई रक्त शर्करा के स्तर पर कार्बोहाइड्रेट के प्रभाव की एक माप है। जो कार्बोहाइड्रेट पाचन के दौरान तेजी से टूटते हैं और रक्तधारा में ग्लुकोज को तेजी से छोड़ते हैं, उनमें उच्च जीआई होता है। जो कार्बोहाइड्रेट रक्त धारा में धीरे-धीरे ग्लुकोज छोड़ते हुए बहुत धीरे-धीरे टूटते हैं उनमें निम्न जीआई होता है। इस अवधारणा का विकास टोरंटो विश्वविद्यालय में डॉ. डैव. जेन्किन्स और उनके सहकर्मियों द्वारा उनके अनुसंधान में यह पता लगाने के लिए किया गया कि मधुमेह से ग्रसित लोगों के लिए कौन सा भोजन सबसे अच्छा है।

जिस आहार में ग्लाइसेमिक इंडेक्स की मात्रा कम होती है वह ब्लड ग्लूकोज के स्तर को बढ़ाता नहीं बल्कि उसे सामान्य रखता है। इससे खून में ग्लूकोज की मात्रा नहीं बढ़ती और मोटापे के साथ-साथ डायबिटीज जैसी खतरनाक बीमारी के होने की संभावना भी कम होती है। इसलिए खाने में 'लो ग्लाइसेमिक इंडेक्स' वाले आहार का सेवन अधिक कीजिए। यहाँ ग्लाईसीमिक लोड को भी जान लेना चाहिए। वस्तुतः ग्लाईसीमिक इंडेक्स में 'सर्विंग पोर्शन' को परिगणित नहीं किया जाता परन्तु ग्लाईसीमिक लोड में इसको परिगणित किये जाने के कारण यह अधिक महत्वपूर्ण है, ऐसा समझा जाता है। यहाँ हम पाठकों के लाभार्थ 'पेलियो गाइड' से कुछ खाद्य पदार्थों के ग्लाईसीमिक इंडेक्स, सर्विंग साइज तथा ग्लाईसीमिक लोड दे रहें हैं ताकि मधुमेह के रोगी अथवा जो लोग अपने वजन पर नियंत्रण रखना चाहते हैं वे आवश्यक जानकारी प्राप्त कर सकें। सामान्य तौर पर ४४ से कम ग्लाइसीमिक इंडेक्स वाले खाद्य पदार्थ कम इंडेक्स वाले माने जाते हैं जबकि ६६ से ऊपर जिनकी ग्लाईसीमिक इंडेक्स है वे उच्च इंडेक्स वाले माने जाते हैं।

खाद्य पदार्थ	ग्लाईसीमिक इंडेक्स	सर्विंग पोर्शन (ग्राम)	ग्लाईसीमिक लोड
सफेद आटे से बनी ब्रेड	७२	३०	१०
चोकरयुक्त आटे की ब्रेड	६३	२५०	१६
कोका कोला	६३	२५० ml	१६
फेंटा	६८	२५० ml	२३
एपल ज्यूस	४४	२५० ml	३०
आरेन्ज ज्यूस (अनस्वीटिंड)	५०	२५० ml	१२
टमाटर ज्यूस	३८	२५० ml	०४
कार्न फ्लेक्स	६३	३०	२३
ओटमील	५५	२५०	१३
जौ	३६	२५०	१२
स्वीट कार्न	६०	२५०	२०
सफेद चावल	८६	१५०	४३
बासमती चावल	६७	१५०	२८
आइस क्रीम	५७	५०	०६
दूध फुल क्रीम	४१	१४६ ml	०४
सपरेटा दूध	२१	२५० ml	०४
दही	३३	२००	११
सेव	३६	१५०	०६
केला (पका)	६२	२०	१६
खजूर	४२	६०	१८
अंगूर	५६	१२०	११
संतरा	४०	१२०	०४
नाशपाती	४२	१२०	०५
तरबूज	७२	१२०	०४
दालें	२६	१५०	०४
सोयाबीन	१५	१५०	०१
गाजर	३५	८०	०२

जब आवे संतोष धन सब धन धूलि समान

कथा सरित

एक बार एक राज्य में भयंकर अकाल पड़ा। लोग भूखों मरने लगे। वहीं एक छोटे से कस्बे में एक धनी व्यक्ति रहता था जो बहुत दयालु था। उसने घोषणा की कि वह कस्बे के सभी छोटे बच्चों को रोज सुबह एक-एक रोटी देगा। अगले दिन सुबह ही उसके घर के सामने रोटी लेने वाले बच्चों की भीड़ जमा हो गई। तभी रोटियाँ लाई गईं लेकिन सभी रोटियाँ एक जैसी नहीं थीं। कुछ रोटियाँ बड़ी थीं तो कुछ छोटी। सभी बच्चे बड़ी रोटी पाना चाहते थे इसलिए धक्का-मुक्की करने लगे सिवाय एक छोटी लड़की के। वह चुपचाप एक तरफ खड़ी हुई भीड़ के समाप्त होने का इंतजार कर रही थी। जब सब बच्चे रोटियाँ उठा चुके तब वह छोटी लड़की आगे आई। टोकरी में सिर्फ एक रोटी बची थी और वो भी सबसे छोटी। लड़की ने प्रसन्नतापूर्वक वह रोटी उठाई और रोटियाँ बाँटनेवालों का धन्यवाद करके अपने घर चली गई।

दूसरे दिन फिर रोटियाँ बंटीं। दूसरे दिन भी रोटियाँ एक जैसी न होकर छोटी-बड़ी ही थीं। बड़ी रोटी पाने के लिए फिर धक्का-मुक्की होने लगी लेकिन छोटी लड़की आज भी शान्त खड़ी थी। उसने सबसे अंत में बची हुई सबसे छोटी रोटी उठाई और रोटी बांटने वालों का धन्यवाद करके अपने घर चली गई। यह क्रम लगातार चलता रहा। हर सुबह रोटियाँ बंटतीं और सब बड़ी से बड़ी रोटी पाने के लिए धक्का-मुक्की करते लेकिन ये छोटी लड़की धक्का-मुक्की करना तो दूर कभी भीड़ में घुसी तक नहीं। उसका नियम बन गया था सबसे बाद में बची हुई रोटी को चुपचाप उठाना और रोटियाँ बांटने वालों का धन्यवाद करके चुपचाप अपने घर चले जाना। रोटियाँ बांटने वाले रोज लड़की का व्यवहार देखते और उसके जाने के बाद उसकी खूब प्रशंसा करते। यह बात रोटियाँ बंटवाने वाले धनवान व्यक्ति के कानों तक भी पहुँची।

एक दिन छोटी लड़की को जो रोटी मिली वह और दिनों के मुकाबले में भी बहुत ही छोटी थी लेकिन लड़की ने रोज की तरह ही उस बहुत छोटी सी रोटी को उठाया और सबका धन्यवाद करके अपने घर चली गई। उसके चेहरे से लगता ही नहीं था कि बहुत छोटी रोटी मिलने पर उसे कोई दुःख हो रहा है। वह हर रोज की तरह प्रसन्न दिख रही थी। घर जाकर जैसे ही लड़की ने रोटी का टुकड़ा तोड़ा उसमें से एक सोने का सिक्का निकलकर वहाँ जमीन पर जा गिरा। लड़की ने सिक्का अपनी माँ को दिखलाया और पूछा कि माँ इस सिक्के का क्या करूँ? माँ ने कहा कि करना क्या है तुम फौरन वापस जाओ और रोटियाँ बंटवाने वाले व्यक्ति को ये सिक्का वापस करके आओ। शायद गलती से ये सिक्का आटे में गिर गया होगा। लड़की सोने का सिक्का लेकर भागी-भागी वापस रोटियाँ बंटने वाले स्थान पर जा पहुँची।

लड़की जब रोटियाँ बंटवाने वाले व्यक्ति को सिक्का देने लगी तो उस व्यक्ति ने कहा कि जब सब बच्चे धक्का-मुक्की कर रहे थे तो तुम बिना परेशान हुए शान्त खड़ी रहतीं थीं और अंत में बची हुई सबसे छोटी रोटी भी हमारा धन्यवाद करके खुशी-खुशी अपने घर ले जाती थीं अतः ये तुम्हारे संतोष व शिष्टाचार का पुरस्कार है। इस पर छोटी बच्ची ने कहा कि संतोष का पुरस्कार तो उसे तभी मिल जाता था जब चुपचाप अलग खड़े होने पर वो धक्का-मुक्की से बच जाती थी। आपकी मदद और आपका प्रेमपूर्वक व्यवहार भी मेरे लिए किसी पुरस्कार से कम नहीं है। यह बात सुनकर वह व्यक्ति बहुत ही प्रसन्न हुआ। उसने लड़की के माता-पिता को बुलवाया और सकंट के उस विकट समय में उनकी काफी मदद की। वास्तव में जो लोग हर हाल में सतुंष्ट व शिष्ट बने रहते हैं वो कभी घाटे में नहीं रहते।

सतुंष्ट व शिष्ट व्यक्ति न केवल हर प्रकार की अव्यवस्था व आपाधापी से बचा रहता है अपितु उन्नति के पर्याप्त अवसर भी उसे औरों से अधिक ही मिलते हैं।

- आशा गुप्ता
ए.डी.-१०६-सी, पीतमपुरा,
नई दिल्ली- ११००३४

राजनीतिक दार्शनिक- महर्षि दयानन्द

शुक्रनीति (२-८६) में दूत की परिभाषा करते हुए कहा गया है कि जो हृदयगत भाव तथा चेष्टा को समझने वाला, राजनीति के छः उपायों के विषय में उचित मंत्र-विचार का जाननेवाला, बोलने में चतुर और निर्भीक होता है, वह दूत कहाता है। दूत के कार्यों के बारे में महर्षि जी लिखते हैं- 'दूत उसको कहते हैं, जो फूट में मेल और मिले हुए दुष्टों को फोड़-तोड़ देवे। दूत वह कर्म करे जिससे शत्रुओं में फूट पड़े। (मनु. ७-६६)
महामना चाणक्य जी का दूत के कार्य के सम्बन्ध में कथन है- (प्र.११/१५) राजा का संदेश दूसरे राजा के पास ले जाना और उसका अपने राजा के पास लाना, संधिभाव को बनाए रखना, अपने राजा के प्रताप को बढ़ाना, अधिक से अधिक मित्र बनाना, शत्रु पक्ष के लोगों को फोड़ना, शत्रु के मित्रों को उससे विमुख करना, कार्यरत् अपने गुप्तचरों अथवा सैनिकों को समय रहते सुरक्षित निकाल लाना, शत्रु के बान्धवों और रत्न आदि का अपहरण, शत्रुदेश में कार्यरत अपने गुप्तचरों के कार्य पर दृष्टि रखना, समय पड़ने पर पराक्रम दिखाना, बंधक रखे शत्रु-बान्धवों को शर्तों के आधार पर छोड़ना, जरूरत पड़ने पर दोनों राजाओं की परस्पर भेंट कराना आदि दूत के कार्य हैं। इस प्रकार के राजा, सेनापति, सैनिक और गुप्तचर आदि जिस राज्य में सक्रिय हों वह राज्य ही पूर्णरूप से सुरक्षित तथा सब सुखों से परिपूर्ण हो सकता है।
महर्षि दयानन्द जी ने वैदिक राजनीति के जिस स्वरूप का दिग्दर्शन सत्यार्थ प्रकाश में कराया है, उसमें राजनीति के लगभग सभी मूलभूत तत्वों का समावेश है। परन्तु यह विडम्बना ही है कि स्वाधीन भारत में भी, आज राजनीति शास्त्र के विद्यार्थी को जहाँ प्लेटो, अरस्तु, हाब्स, लाक, रूसो, मैकियावेली आदि का राजनीतिक दर्शन पढ़ाया जाता है, वहीं स्वामी दयानन्द प्रणीत राजनीतिक चिन्तन का समावेश नहीं किया जाता। वस्तुतः महर्षि दयानन्द को एक धर्म संशोधक तथा समाज सुधारक के रूप में ही अधिक देखा गया है, राजनीतिक दर्शन के प्रवर्त्तक के रूप में नहीं।

जबकि उपरोक्त विवरण से स्पष्ट है कि महर्षि ने उस समय में उन राजनीतिक सिद्धान्तों का प्रणयन किया जो उनके समय से काफी आगे थे। राजनीति शास्त्र के प्रमुख अध्येताओं की निम्न अवधारणाऐं देखने योग्य हैं-

It is to be noted however, that Swami Dayanand did not only give expression to the sprit of the age, but also formulated politicial views which were far in advance of his time. [Dayanand and his Political Thought by B.B. Majumdar]

In the history of the researches in to the ancient Indian polity Swami Dayanand must be given a place of honour. It was he, who for the first time brought before the modern world a coherent and comprehensive views of the indo-Aryan Polity. (same)

Pro. V.P. Z Verma- The Saffron-clad Statesman में लिखते हैं-

"He is true statesman," says Dr. Jadunath Sarkar, "who can legislate for the future, who can set a force at work which will go on influencing the lives and thoughts of unborn generations. When the history of India's growth comes to be written that high rank will be adjudged to the 'naked Fakir', Dayananda Saraswati: Indeed Dayananda occupies a pride of place in the political history of India as great statesman.

सम्पादक- अशोक आर्य

जब तक मनुष्य धार्मिक रहते हैं, तभी तक राज्य बढ़ता रहता है और जब दुष्टाचारी होते हैं, तब नष्ट-भ्रष्ट हो जाता है। महाविद्वानों को विद्यासभाधिकारी, धार्मिक विद्वानों को धर्मसभाऽधिकारी, प्रशंसनीय धार्मिक पुरुषों को राजसभा के सभासद् और जो उन सबमें सर्वोत्तम गुणकर्मस्वभाव युक्त महान् पुरुष हो, उसको राजसभा का पतिरूप मानके सब प्रकार से उन्नति करें। तीनों सभाओं की सम्मति से राजनीति के उत्तम नियम और नियमों के अधीन सब लोग वर्तें, सब के हितकारक कामों में सम्मति करें। सर्वहित करने के लिए परतन्त्र और धर्मयुक्त कर्मों में अर्थात् जो-जो निज के काम हैं, उन-उन में स्वतन्त्र रहें। -सत्यार्थ प्रकाश षष्ठ समुल्लास

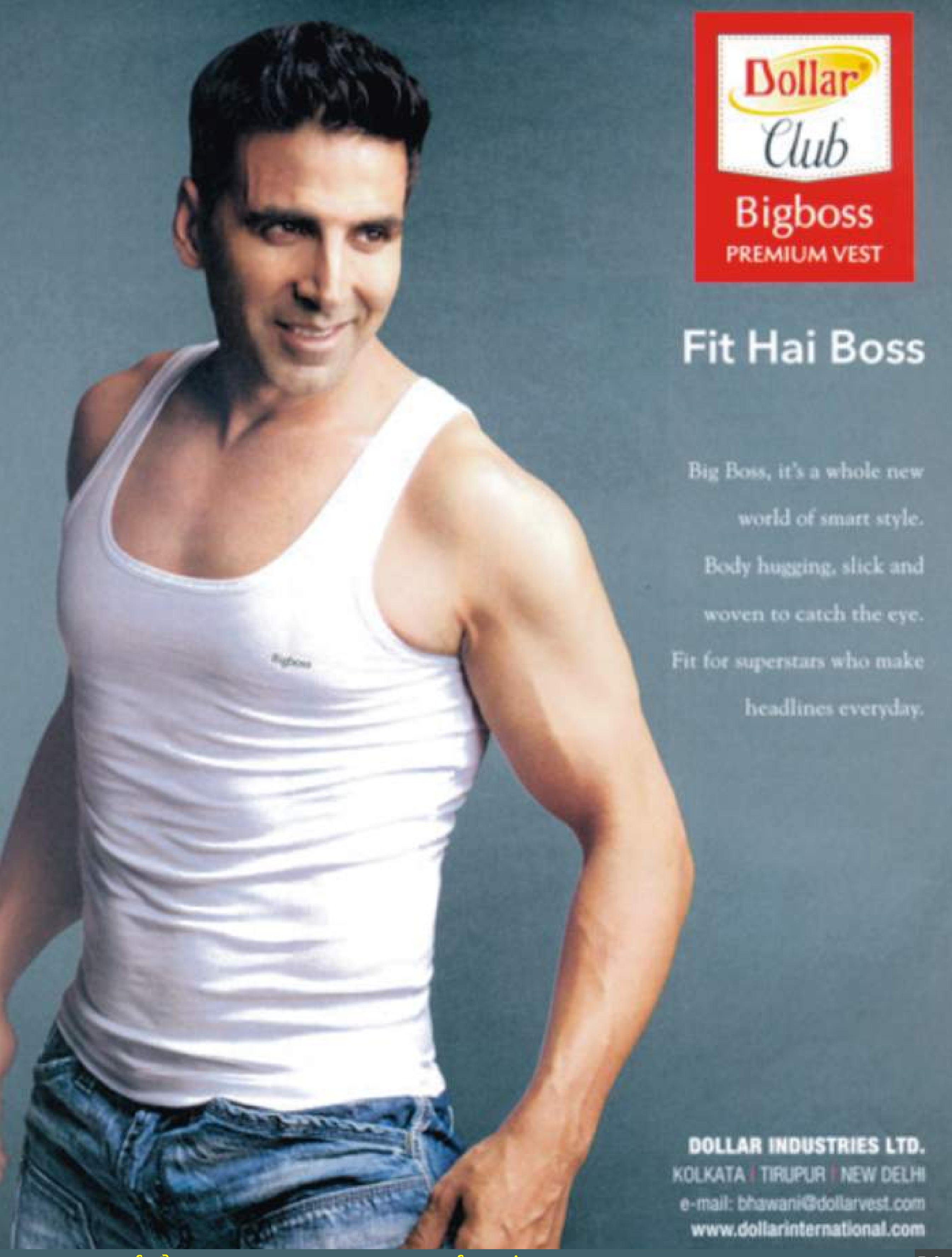
Dollar
Club
Bigboss
PREMIUM VEST
Fit Hai Boss
Big Boss, it's a whole new
world of smart style.
Body hugging, slick and
woven to catch the eye.
Fit for superstars who make
headlines everyday.
DOLLAR INDUSTRIES LTD.
KOLKATA | TIRUPUR | NEW DELHI
e-mail: bhawani@dollarvest.com
www.dollarinternational.com

RNI Registration No. RAJHIN/2012/47777 November-2017 Postal Registration No. RJ/UD/29-107/2016-2018

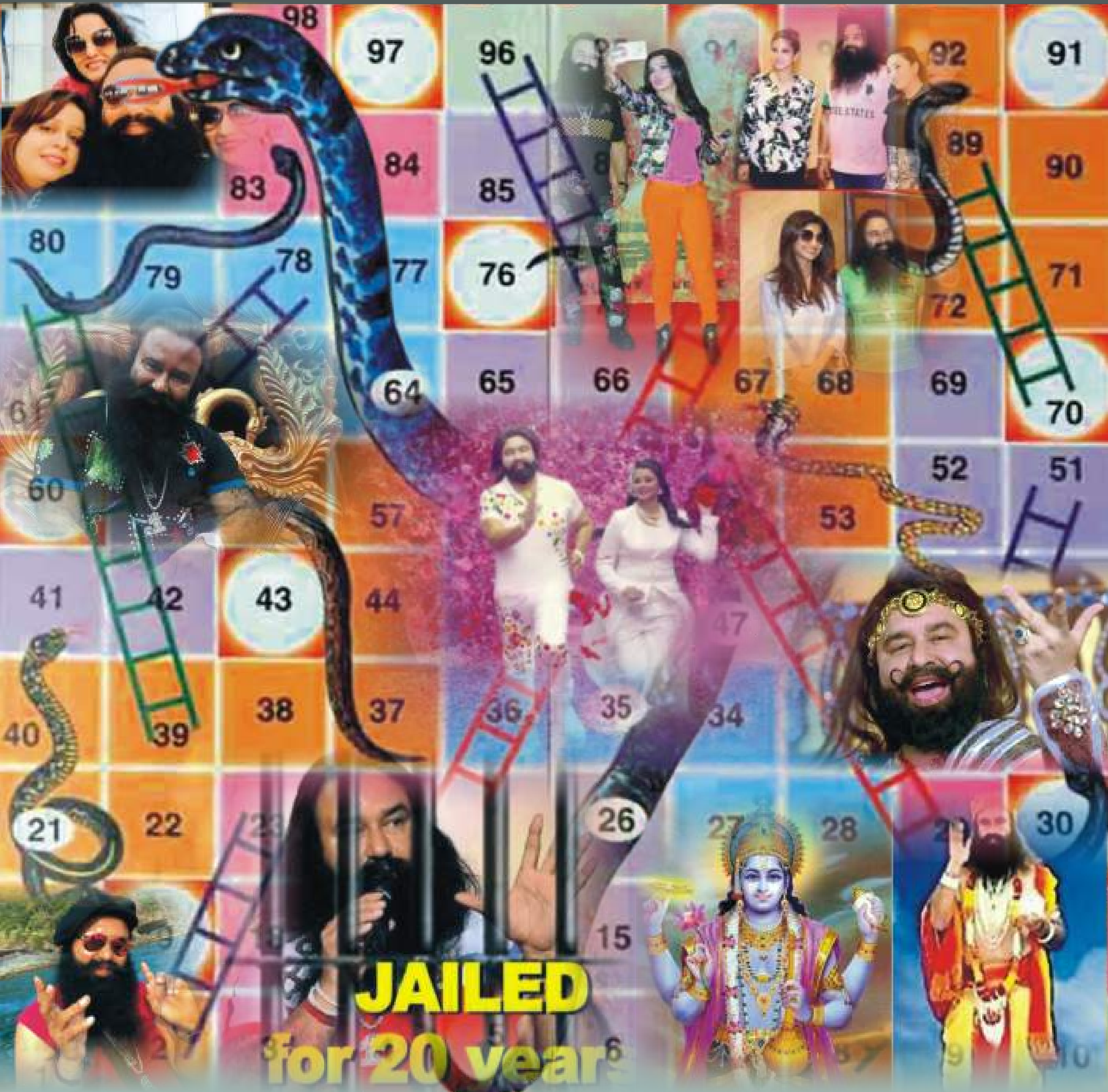

जो गुरु लोभी, क्रोधी, मोही और कामी हो तो उसको सर्वथा छोड़ देना, शिक्षा करनी। सहज शिक्षा से न माने तो अर्घ्य-पाद्य अर्थात् ताड़ना, दंड, प्राणहरण तक भी करने में कुछ दोष नहीं।

– सत्यार्थप्रकाश पृ. ३२३

स्वत्वाधिकारी, श्रीमद्दयानन्द सत्यार्थप्रकाश न्यास, उदयपुर की ओर से प्रकाशक, मुद्रक अशोक कुमार आर्य द्वारा चौधरी ऑफसेट प्रा. लि., 11/12 गुरुरामदास कॉलोनी, उदयपुर से मुद्रित
प्रेषण कार्यालय– श्रीमद्दयानन्द सत्यार्थप्रकाश न्यास नवलखा महल गुलाबबाग, महर्षि दयानन्द मार्ग, उदयपुर–313001 से प्रकाशित, सम्पादक–अशोक कुमार आर्य
मुद्रण दिनांक- प्रत्येक माह की ३ तारीख | प्रेषण दिनांक- प्रत्येक माह की ७ तारीख | प्रेषण कार्यालय- मुख्य डाकघर, चेतक सर्कल, उदयपुर